अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी चित्रों की ज़बानी

सम्पादक
रामेश्वरदास गुप्त

अग्रोहा विकास ट्रस्ट

अग्रोहा-धाम
के निर्माण की कहानी
चित्रों की ज़बानी

सम्पादक
रामेश्वरदास गुप्त

अग्रोहा विकास ट्रस्ट

प्रकाशक :
श्री नन्दकिशोर गोयनका
अध्यक्ष, अग्रोहा विकास ट्रस्ट
अग्रोहा-धाम
अग्रोहा-125047 (हरियाणा)

लेखक, सम्पादक तथा संकलनकर्त्ता :
श्री रामेश्वरदास गुप्त
डी-35, साउथ एक्सटैंशन भाग एक
नई दिल्ली-110049

प्रथम संस्करण, सितम्बर-1995
दूसरा संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण, अप्रैल-1999

मूल्य - बीस रुपये

मुद्रक: आर०जी० एण्ड कम्पनी, बी-30, सैक्टर-9, नोएडा

महाराजा अग्रसेन डाक टिकट

भारत सरकार ने महाराजा अग्रसेन के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया। 25 पैसे के इस टिकट का विमोचन तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने 24 सितम्बर 1976 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में किया।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट से सम्बंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज़

(1) सोसायटी एक्ट के अनुसार अग्रोहा विकास ट्रस्ट के पंजीकरण का प्रमाण-पत्र *(देखिए पृष्ठ 5 पर)*

(2) आयकर की धारा 12ए(9) के अनुसार पंजीकरण का प्रमाण-पत्र *(देखिए पृष्ठ 6 पर)*

(3) अग्रोहा विकास ट्रस्ट को श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कॉलेज सोसायटी ने 23 एकड़ भूमि दान स्वरूप प्रदान की। उसकी रजिस्ट्री के दस्तावेज़ *(देखिए पृष्ठ 7 से 12 पर)*

सत्यमेव जयते

CERTIFICATE OF REGISTRATION OF SOCIETIES : ACT. XXI of 1860.

No. S/ 8139 of 19 76

I hereby certify that अरोहा विकास ट्रस्ट

has this day been registered under the Societies Registration Act, XXI of 1860.

Given under my hand at New Delhi

this 9वें day of अक्टूबर

One thousand nine hundred and छिहत्तर

Registration Fee of Rs. 50/- paid.

REGISTRAR OF SOCIETIES:
DELHI ADMINISTRATION
NEW DELHI

No.CIT.II/TE(52)/ 76/

OFFICE OF THE
COMMISSIONER OF INCOME TAX
DELHI-II, NEW DELHI
DATED, NEW DELHI, THE 9-8-76

Sub:- Registration u/s 12A(a) of the I.T.Act, 1961- **Agroha Vikas Trust, New Delhi.**

Agroha Vikas Trust, New Delhi. as constituted by the Trust Deed/Memorandum of Association dated **9-7-1976** has filed the registration application under section 12A(a) of the I.T. Act, 1961 in the prescribed form on **15-7-1976** i.e. within the stipulated time limit/was out of time by _____ months/days. As the trust/institution was prevented by sufficient cause in filing the application the delay has been condoned/sufficient justification has not been given for the delay in filing the application and as such it is rejected.

2. The application has been entered at No. **DLI(C)(I-684)** in the Register of applications u/s 12A(a) maintained in this office.

Commissioner of Income Tax Delhi
Seal of the C.I.T.
New Delhi

(R.K. SINGH)
INCOME TAX OFFICER (H.Qrs.II)
for COMMISSIONER OF INCOME TAX
DELHI-II, NEW DELHI.

The Secretary,

Agroha Vikas Trust,

D-36, South Extension Part-I,

NEW DELHI-110049.

NOTE: This certificate of registration u/s 12A(a) of the I.T. Act, 1961 does not by itself confer any right on any trust/institution to claim exemption from tax in respect of its income in as much as such exemption depends on the satisfaction of all other conditions in this behalf laid-down in Sections 11, 12, 12A(a) and 13 of the I.T. Act.

Income-tax Officer(H.Q.II)
for C.I.T., DELHI-II, NEW DELHI.

200 Rs.

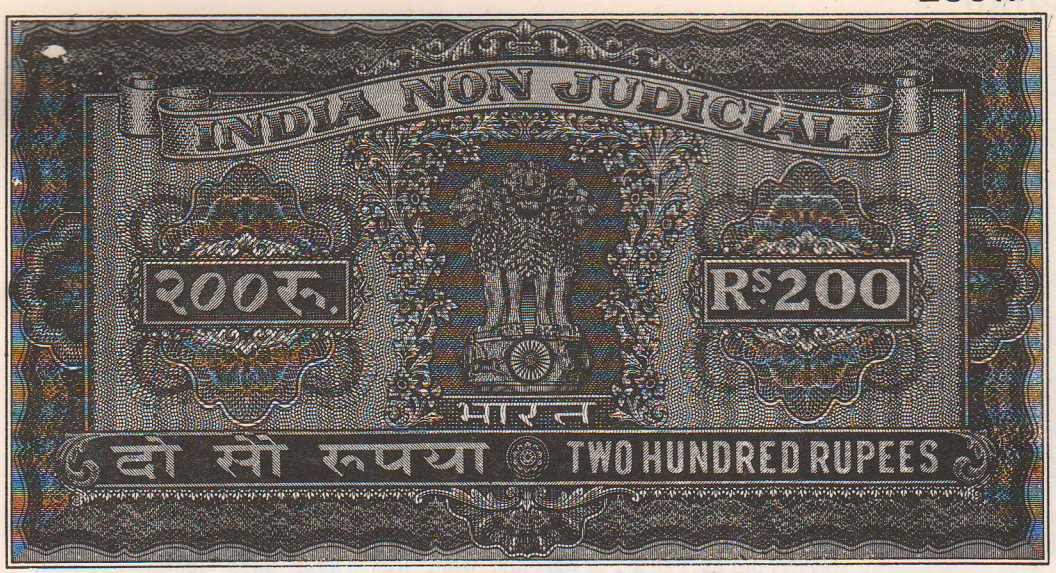

तमलीकनामा बाबत भूमि लगभग २३ एकड

वाकय अग्रोहा तहसील फतेहबाद जिला हिसार

मालयति २३,०००) रु० जिस पर हरियाणा के

रेट के अनुसार स्टाम्प ३४५) का लगाया गया है ।

Certified [illegible] Stamp Act that [illegible] Rs. 345/

Collector of Stamps Delhi 27/9/76

हम श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेकनीकल कालेज सोसायटी अग्रोहा (रजिस्टर्ड) वाकय ४४२१ नई सड़क, दिल्ली-११०००६ द्वारा श्री तिलकराज अग्रवाल पुत्र श्री हेमराज अग्रवाल निवासी नं० ५५ अशोका अपार्टमैन्ट, नेपीयन सी रोड, बम्बई हाल १७।३३ शक्तिनगर, दिल्ली अध्यक्ष, श्री देवकीनन्दन गुप्त पुत्र श्री कन्हैयालाल निवासी नं० २८ बाजार लेन, बंगालीमल मार्केट, नयी दिल्ली- ११०००१ महामन्त्री उपरोक्त सोसायटी प्रथम पक्ष,

अग्रोहा विकास ट्रस्ट (रजिस्टर्ड) डी-३५ साउथ एक्सटेंशन, पार्ट-१, नयी दिल्ली ११००४६, द्वारा श्री रामेश्वरदास गुप्त पुत्र श्री मौजीराम गुप्त निवासी डी-३५, साउथ एक्सटेंशन पार्ट-१, नयी दिल्ली-४६ मन्त्री उपरोक्त ट्रस्ट द्वितीय पक्ष के हैं ।

प्रथम पक्ष की सोसायटी जेर सोसायटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट नं० २१ सन् १८६० पंजाब संशोधन अधिनियम १९५७ जो संघीय क्षेत्र दिल्ली तक लागू है के अन्तर्गत नं० एस-८।२७४० दिनांक २२-५-१९६५ पंजीकृत है और द्वितीय पक्ष की सोसायटी नं० ८१३६ दिनांक ६ जुलाई १९७६ पर पंजीकृत है ।

प्रथम पक्ष भूमि तादादी लगभग २३ एकड़ हस्बे तफसील भूमि तादादी १७८ कनाल ८ मरले, मुनदरजे आयत नं० १३४ कीला नं० ६ , १२ , १३ , १४,

६	१२	१३	१४
८-७	३-१४	६-१३	५-१८

Presented by Shri Tilak Raj Aggarwal son of Shri Hem Raj Agarwal R/O 55, Ashoka Apartment Neopeon Sea Road, Bombay-6, at the office of the Registrar, Delhi on this 4th day of October, 1976 between the hours 11.00 A.M. and 12.00 Noon.

Tilak Raj

(P. GHOSH) 4/X/76
REGISTRAR: DELHI.
4.10.1976.

Execution of the Deed(Settlement deed) admitted by Shri Tilak Raj Aggarwal, as President, and Shri Deoki Nandan Gupta s/o Shri Kanihya Lal Gupta r/o 28, Bazar Lane, Bengali Market, New Delhi - as General Secretary of M/S Aggarsen Engineering & Technical College Society, Agroha (Regd), Nai Sarak, Delhi (1st Party) and Shri Rameshwar Dass Gupta s/oShri Mouji Ram Gupta as Secretary of Agroha Vikas Trust (Regd) D-35, South Extension, Pt.I, New Delhi(2nd Party) who are identified by Shri Laxmi Narain Agarwal s/o Shri Prabhu Dayal, 21/33, Shakti Nagar, Delhi and Shri Baboo Lal s/o Shri Ram Richpal r/o 4322m Gali Bhairon, Nai Sarak, Delhi Identity Card No.15 dated 11.8.1975 issued by the Sub-Divisional Magistrate, Delhi. The contents of the deed explained to the parties who understand the terms and conditions of the deed and admit them as correct.

Tilak Raj

(P. GHOSH)
REGISTRAR: DELHI.
4.10.1976.

100 Rs.

पृष्ठ २

१५/२, १६/८-०, १७/७-१४, १८/४-१२, २४/५-१०, २५/८-० व आयत नं० १३५ कीला नं० २०/६-१६, २०/२-६

२१/८-०, २२/५-४, आयत नं० १४६ कीला नं० १/८-०, २/८-०, ६/८-०, १०/८-०, ११/८-०,

१२/७-८, २०/८-०, व आयत नं० १४७ कीला नं० ४/४-८, ५/८-०, ६/८-०, ७/२-८, १५/८-७,

१६/८-० वाकय मौजा अग्रोहा तहसील फतेहबाद जिला हिसार जरे खरीद प्रथम पदा बजरिये विक्रय पत्र दिनांक ३ फरवरी १९६६ दस्तावेज नं० २६४३ बही नं० १ खण्ड नं० १९६ पृष्ठ ३४५ मुसदिका ३ फरवरी १९६६ महकमा सब रजिस्ट्रार फतेहबाद इकरारी श्री अतरसिंह व भूमि तादादी १ कनाल १८ मरले मुनदरजे आयत नं० १४७ कीला नं० १५ बरूए जमाबन्दी १९७०-७१ वशमूल अन्य भूमि वाकय ग्राम अग्रोहा जिला हिसार जरे खरीद प्रथम पदा बजरिये विक्रय पत्र ६ अगस्त १९७६ दस्तावेज नं० १९५५ बही नं० १ खण्ड नं० ४०३ पृष्ठ १५२ मुसदिका ६ अगस्त १९७६ महकमा सब-रजिस्ट्रार हिसार, इकरारी अतरचन्द का मालिक व काबिज है । जिसकी मालयत इस समय २३,०००) रू० है और सीमायें इस प्रकार हैं : -

पूर्व : राजकीय उच्चतर माध्यमिक विधालय अग्रोहा

पश्चिम : थेह

उत्तर : जी० टी० रोड

दक्षिण : भूमि ग्राम पंचायत अग्रोहा ।

---३

Registered as No. 417 in additional Book No. 1 Volume No. 178 on pages 10 to 13 on the 5th day of October 1976.

REGISTRAR DELHI.
5.10.1976.

इस समय तक उपरोक्त सम्पत्ति हर प्रकार के बोझ से बिलकुल मुक्त है । प्रथम पक्ष को उसके हस्तांतरित करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है । प्रथम पक्ष से द्वितीय पक्ष ने अपने पत्र दिनांक १-८-१९७६ द्वारा अनुरोध किया था कि अग्रोहा के खण्डहरों (खेडे) के निकट की उपरोक्त २३ एकड भूमि उनको विकास कार्य हेतु दे दी जावे । प्रथम पक्ष ने अपनी बैठक २९-८-१९७६ में प्रस्ताव नं० ३ द्वारा द्वितीय पक्ष के उपरोक्त पत्र १-८-७६ पर विचार करके उनको उपरोक्त २३ एकड भूमि वाकय अग्रोहा निम्न कार्य हेतु देनी स्वीकार कर ली है ।

(क) महाराजा अग्रसेन की भव्य स्मृति मन्दिर का तीर्थस्थान के रूप में निर्माण करना,

(ख) यात्रियो व पर्यटकों के लिए धर्मशाला व अतिथिगृह का निर्माण करना,

(ग) उच्च शिक्षा के लिए कालेजों, एवं विश्वविद्यालयों की स्थापना करना,

(घ) विद्यालय, अनुसंधान केन्द्र, पुस्तकालय, चिकित्सालय आदि खोलना,

(ड) विद्यार्थियों के लिए छात्रावासों का निर्माण करना ।

द्वितीय पक्ष ने उपरोक्त भूमि उपरोक्त कार्यों के प्रयोग के लिए लेनी स्वीकार कर ली है । अत: प्रण करते हैं कि हम दोनों पक्ष निम्नधाराओं के पाबन्द रहेंगे -

१- यह कि प्रथम पक्ष ने उपरोक्त भूमि का कब्जा द्वितीय पक्ष को दे दिया है और द्वितीय पक्ष ने कब्जा ले लिया है ।

२ - यह कि द्वितीय पक्ष उपरोक्त भूमि पर उपरोक्त शर्तों के अन्तर्गत जो भी निर्माण कार्य करेंगे उसका सारा खर्चा और प्रबन्ध द्वितीय पक्ष स्वयं ही करेंगे ।

३- यह कि उपरोक्त भूमि की रजिस्टरी आदि कराने एवं उससे सम्बन्धित अन्य खरचे द्वितीय पक्ष ही करेंगे ।

४- यह कि द्वितीय पक्ष उपरोक्त भूमि को कभी भी किसी भी प्रकार से रहन,

5 Rs

पृष्ठ ४

वय, अथवा किसी अन्य को हस्तातरित नही कर सकेंगे । नहीं किसी अन्य को लीज पर दे सकेंगे ।

५- यह कि यदि अगले ५ वर्षों में उपरोक्त जमीन पर उपरोक्त शर्तों के अन्तर्गत द्वितीय पक्ष सन्तोषजनक निर्माण कार्य नही कर सके तो ये जमीन प्रथम पक्ष को वापस हुई समझी जावेगी ।

६- यह कि प्रथम पक्ष श्री अग्रसेन ~~मेडिकल~~ इंजीनियरिंग एण्ड टेकनीकल कालेज सोसायटी अग्रोहा (रजिस्टर्ड) के प्रधान और महामन्त्री उपरोक्त अग्रोहा विकास ट्रस्ट (रजिस्टर्ड) द्वितीय पक्ष के हमेशा पदेन सदस्य बने रहेंगे । ये ही दोनों व्यक्ति प्रथम पक्ष की ओर से अग्रोहा विकास ट्रस्ट की कार्यकारिणी के भी सदैव सदस्य बने रहेंगे ।

अतः यह तमलीकनामा अर्थात सेटलमेन्टडीड लिख दिया कि सनद रहे और समय पर काम आवे । दिनांक २७-६-१६७६ मजमून पढ़कर सुनाया व समझाया गया, सुनकर ठीक मान लिया । सुमेरचन्द जैन, डीड राइटर, दिल्ली । रजि० नं० 185/Free

साक्षी नं० १	प्रथम पक्ष
श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टेकनीकल कालेज
पुत्र श्री प्रभुदयाल निवासी	सोसायटी अग्रोहा (रजिस्टर्ड)
२१।३३ शक्तिनगर, अग्रवाल मार्ग,	द्वारा (१) श्री तिलकराज अग्रवाल, अध्यक्ष
दिल्ली । [signature]	[signature]
साक्षी नं० २	(२) श्री देवकीनन्दन गुप्ता, महामंत्री
श्री बाबूलाल पुत्र श्री रामरिछपाल.	[signature]
४३२२ गली भैरों, नई सड़क दिल्ली ।	द्वितीय पक्ष- अग्रोहा विकास ट्रस्ट (रजि०)
	द्वारा- रामेश्वरदास गुप्त - मन्त्री
[signature]	[signature]

अग्रोहा - धाम
के निर्माण की कहानी
चित्रों की ज़बानी

अग्रोहा विकास ट्रस्ट के पदाधिकारियों का विवरण
9 मई 1976 से अब (31 मार्च 1999) तक

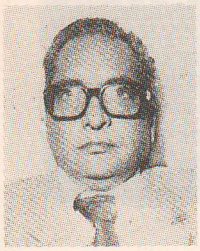

अध्यक्ष

9-5-1976 से 28-10-1979 तक

स्व. श्री देवीसहाय जिंदल

1/77, पंजाबी बाग वैस्ट
नई दिल्ली-110026

28-10-1979 से 9-1-1983 तक

श्री बालकृष्ण गोयनका

फाउण्टेन प्लाजा
सैवन्थ फ्लोर, इग्मोर
चेन्नई-600008

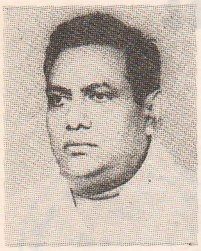

9-1-1983 से 22-12-1985 तक

स्व. श्री चाननमल बंसल

दिल्ली रोड़
हिसार-(हरियाणा)

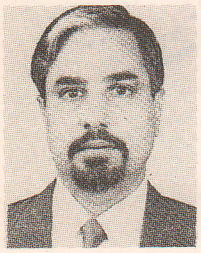

22-12-1985 से 7-12-1997 तक

श्री सुभाष चन्द्र गोयल

कान्टीनेंटल बिल्डिंग
135-डॉ एनी बेसैंट रोड,
वरली, मुम्बई - 400018

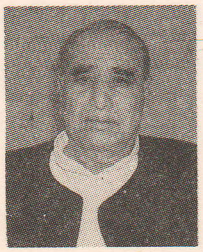

7-12-1997 से

श्री नंद किशोर गोयनका

कृष्णा मंडी,
हिसार (हरियाणा)

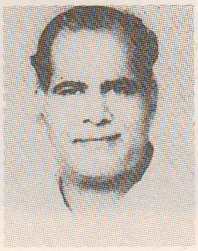

कार्यकारी अध्यक्ष

20-10-1994 से 7-12-1997

श्री श्रीकिशन मोदी

नीम का थाना - 332713
(सीकर) राज.

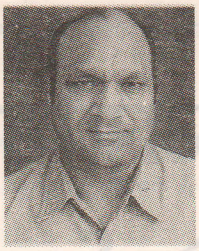

7-12-97 से

श्री सत्य प्रकाश आर्य

20, नारायण डामोलकर स्ट्रीट
मुम्बई-400006
☎ 369860

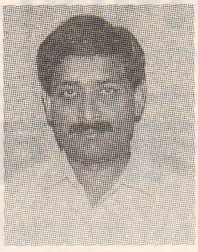

वरिष्ठ उपाध्यक्ष

7-12-1997 से

श्री नरेश कुमार गुप्ता

सी-320 विवेक विहार
नई दिल्ली-110095

उपाध्यक्ष

28-10-1979 से 25-4-1981 तक

स्व. सूरजमल गर्ग, एडवाकेट

बंगला नं.-9, स्ट्रीट नं.-2
नया पलासिया, इन्दौर (म.प्र.)

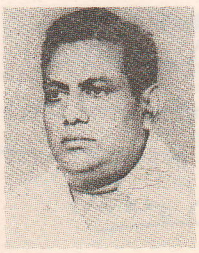

25-4-1981 से 9-1-1983 तक

स्व. श्री चाननमल बंसल

दिल्ली रोड़
हिसार-(हरियाणा)

9-1-1983 से 22-12-1985 तक

14-11-1991 से 7-12-1997

श्री कालीचरण केशान

150/1, काटन स्ट्रीट

कलकत्ता - 700007

22-12-1985 से 17-12-1988 तक

श्री गौरी शंकर सिंघल

हरियाणा फ्लोर मिल

जींद - 126102

17-12-1988 से 14-11-1991 तक

20-10-1994 से 7-12-1997 तक

डा. स्वराज्यमी अग्रवाल

जीवन कालोनी, बलदेव बाग

जबलपुर-482002 (म.प्र.)

14-11-1991 से 20-10-1994 तक

श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल

ई-1/79 अरेरा कालोनी

भोपाल-462016

14-11-1991 से 20-10-1994 तक

श्री निर्मल कुमार अग्रवाल

2135, 16 बी.मेन एच.ए.एल.

II स्टेज

बेंगलौर-560038

7-12-1997 से

श्री चरती लाल गोयल

60 बनारसी दास एस्टेट

लखनऊ रोड, नई दिल्ली-110054

7-12-1997 से

श्री बद्री प्रसाद अग्रवाल

जीवन कालोनी, बलदेव बाग

जबलपुर-482002 (म.प्र.)

7-12-1997 से

श्री दयाल कृष्ण एडवोकेट

डैम्पियर नगर

मथुरा-281001

महामंत्री

9-5-1976 से 22-12-1986 तक

श्री रामेश्वरदास गुप्त

डी-35, साउथ एक्सटैंशन-एक

नई दिल्ली-1100049

6-2-1987 से 7-12-97 तक

श्री बालेश्वर अग्रवाल

6-एम, भगत सिंह मार्केट

नई दिल्ली-110001

7-12-97 से

श्री देवराज भगत

प्रीतिनगर, हिसार-(हरियाणा)

14-11-1991 से 20-10-1994 तक

श्री मुरारीलाल रासीवासिया

डब्ल्यू-153, ग्रेटर कैलाश-II

नई दिल्ली-110048

मंत्री

28-10-1979 से 9-1-1983 तक

श्री हरपतराय टांटिया

526, विनोबा बस्ती

श्रीगंगानगर-335001 (राज.)

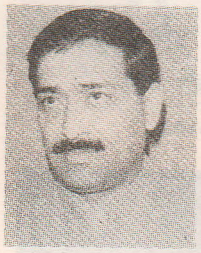

20-10-1994 से 7-12-1997 तक

श्री नरेश कुमार गुप्ता

सी-320, विवेक विहार

दिल्ली-110095

9-1-1983 से 22-5-1985 तक

स्व. बाबूलाल सलमें वाले

हैप्पी स्कूल, दरियागंज

दिल्ली-110002

7-12-1997 से

श्री बी. डी. गुप्ता

15 महावीर छाया

बल्लभबाग लेन, घाट कोपर पूर्व

मुम्बई-77

22-12-1985 से 17-12-1988 तक

श्री भरतलाल गुप्ता

पूजा नर्सरी सत्याग्रह रोड

प्रेमचन्द नगर के सामने

अहमदाबाद-380054

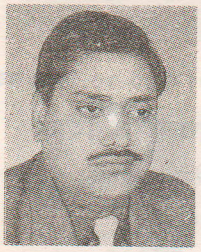

7-12-1997 से

श्री रमेश चन्द्र गर्ग

ए. बी. रोड़

मुरैना (म.प्र.) -476001

17-12-1988 से 7-12-1997 तक

श्री स्वरूपचंद गोयल

6-वसुन्धरा, भूलाभाई देसाई रोड

मुम्बई-400026

7-12-1997 से

श्री मुन्शी राम गुप्ता

डी-13, नारायण विहार

नई दिल्ली-110028

7-12-1997 से

श्रीमती शान्ता जैन

गोहाना रोड़, सोनीपत
(हरियाणा)

12-5-1985 से 17-12-1988 तक

श्री रतनलाल गर्ग

आर-7, नेहरू एन्कलेव, कालकाजी
नई दिल्ली-110019
17-12-1988 से 20-10-1994 तक

कोषाध्यक्ष

9-5-1976 से 28-10-1979 तक

स्व. श्री बृजलाल चौधरी

हिन्दुस्तान कमर्शियल कारपोरेशन
23-मननगप्पण स्ट्रीट
चेन्नई-600001

श्री प्यारे लाल गोयल

कटला रामलीला
हिसार-(हरियाणा)

28-10-1979 से 9-1-1983 तक

श्री गूगनमल बंसल

2109 खारी बावली
दिल्ली-110006

20-10-1994 से 7-12-1997 तक

श्री विजेन्द्र मित्तल

109-110 सैक्टर 15 ए
हिसार (हरियाणा)

9-1-1983 से 12-5-1985 तक

श्री इन्द्राज सिंह अग्रवाल

48, माडल बस्ती
नई दिल्ली-110005

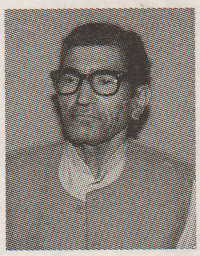

7-12-1997 से

श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल

117-जैन गली, अन्दर नागोरी गेट
हिसार-(हरियाणा)

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

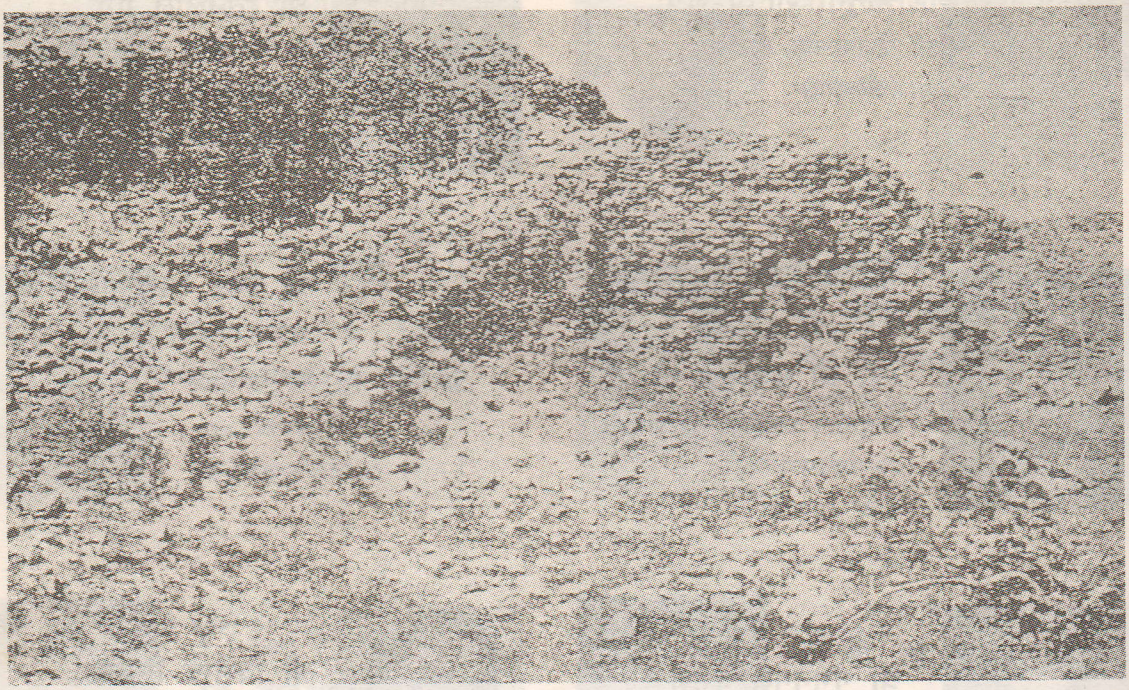

यही है वह खेड़ा (थेह) जहाँ महाराजा अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा दबी पड़ी है। यहाँ सरकार ने अनेक बार खुदाई भी करवाई है।

खेड़े (थेह) की खुदाई में निकला स्थान।

खेड़े (थेह) की खुदाई में निकला स्थान।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

29 अक्तूबर 1979 को अग्रोहा के खेड़े (थेह) के एक भाग का अवलोकन करते हुए अग्रोहा विकास ट्रस्ट के तत्कालीन अध्यक्ष श्री बालकृष्ण गोयनका दाएं से पांचवे एवं अन्य साथी।

दिल्ली से चण्डीगढ़ भेजी गई ईंटों की पूजा करवाते हुए बाएँ से :- श्री कृष्णअवतार गुप्त, हरियाणा के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री बनारसीदास गुप्ता, उनकी पत्नी, बीच में पंडित जी, स्व. श्री मुरारीलाल बंसल और श्री देवराज अग्रवाल।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

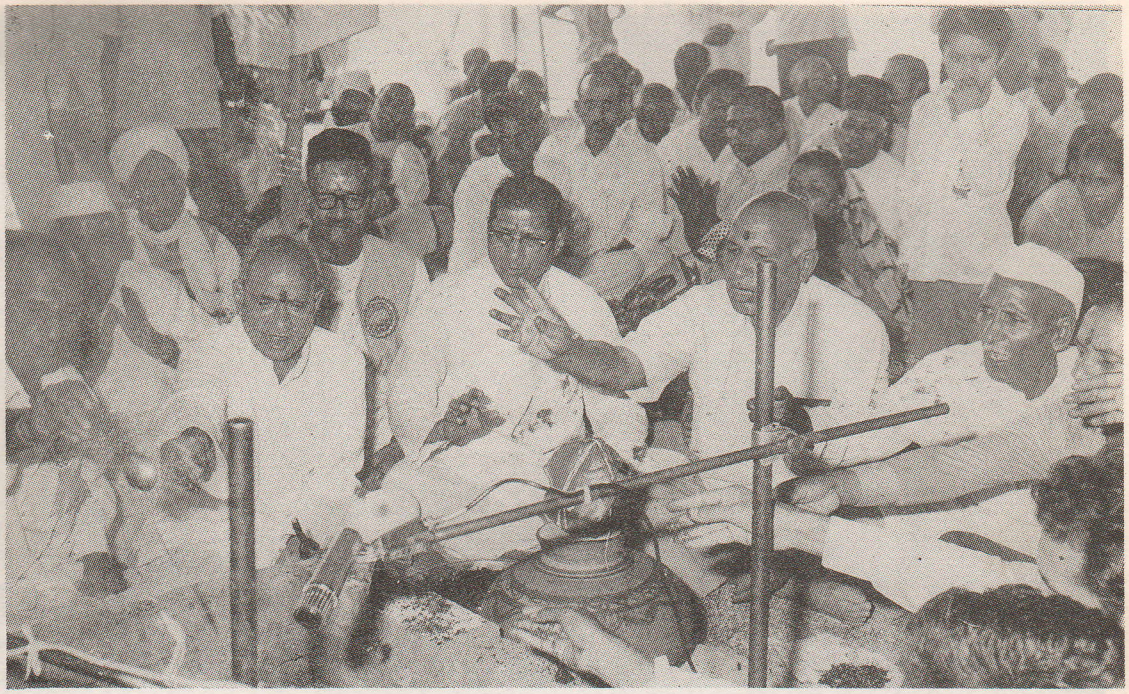

अग्रोहा में 29 सितम्बर 1976 को भूमि-पूजन का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा हुआ।

अग्रोहा में शिलान्यास समारोह के अवसर पर आयोजित सभा में बोलते हुए स्व. श्री लालमन आर्य, उनके बाईं और बैठे हैं श्री श्रीकिशन मोदी, स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल, श्री ओमप्रकाश जिंदल, स्व. पं० मनुदत्त शर्मा, अग्रोहा विकास ट्रस्ट के तत्कालीन अध्यक्ष स्व. श्री देवीसहाय जिंदल आदि।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

नींव में रखी जाने वाली ईंट को उठाए हुए बाएँ से :- श्री रामेश्वरदास गुप्त, स्व. श्री बशेशरनाथ गोटेवाला, श्री श्रीकिशन मोदी, स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल, पीछे बैठे हैं श्री ओमप्रकाश अग्रवाल।

नींव में करनी से सीमेंट लगाते हुए स्व. प्रो० रामसिंह। पास में ईंटों पर हाथ रखे हुए खड़े हैं श्री राधेश्याम गुप्ता।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

अग्रोहा-धाम के निर्माण का शिलान्यास किया अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री श्रीकिशन मोदी ने 29 सितम्बर 1978 को।

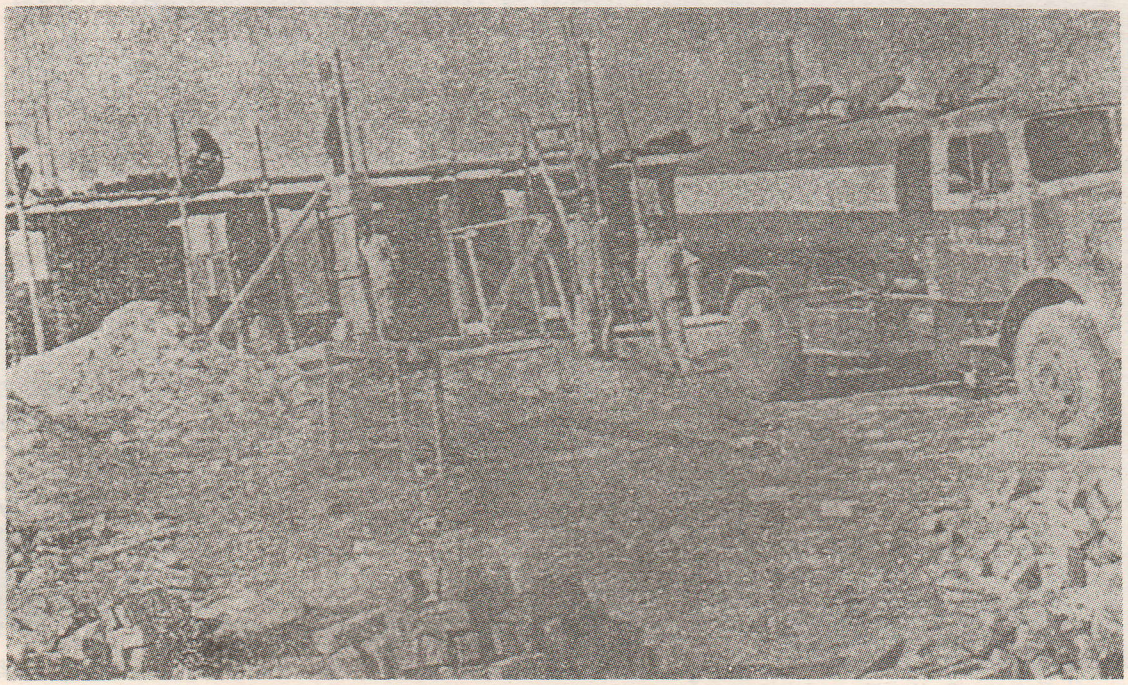

अग्रोहाधाम का निर्माण-कार्य आरम्भ हुआ, धर्मशाला के निर्माण से। पानी? वह तो अग्रोहा में था ही नहीं। अग्रोहा निर्माण-समिति के तत्कालीन मंत्री श्री सुरेशकुमार गुप्ता अपने इस टेंकर से रोजाना हिसार से अग्रोहा पानी भेजते थे।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

धर्मशाला के 22 कमरों और बरामदों का निर्माण पूरा हुआ।

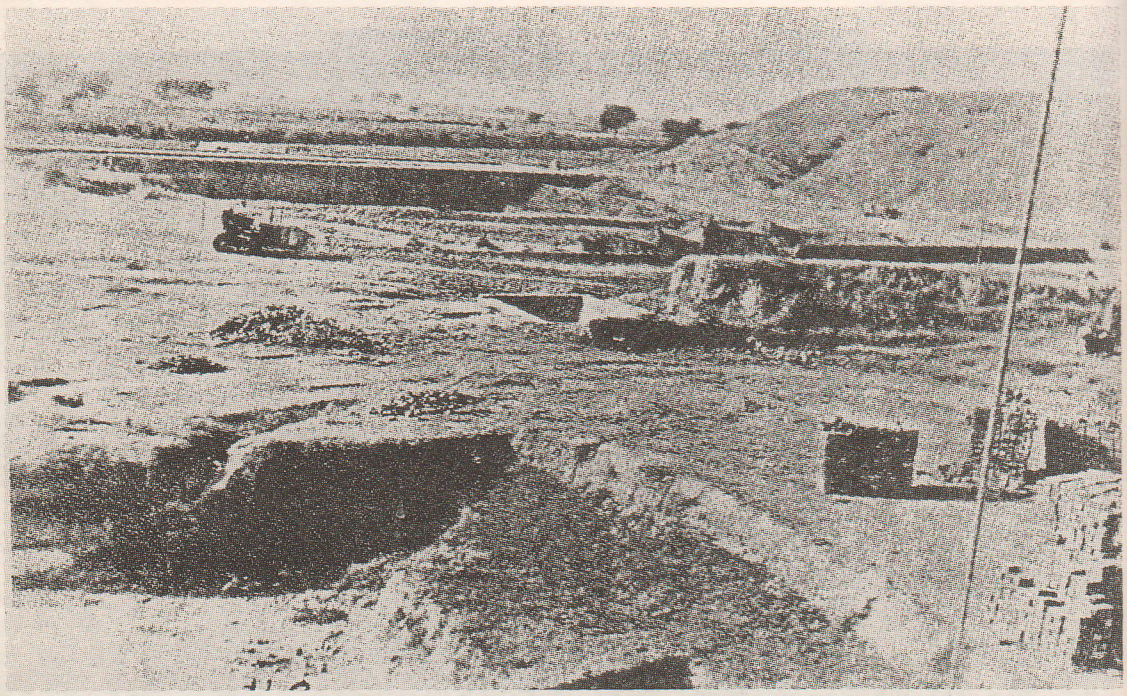

देखिए कितना ऊबड़-खाबड़ था यह स्थान जिसे बुलडोजर से समतल किया जा रहा है। सामने जो बांध की दीवार दिखलाई दे रही है, यह दीवार वर्षा का पानी रोकने (एकत्रित करने) के लिये बनाई गई थी। अब इस दीवार पर शक्ति-सरोवर के अन्दर 'समुद्र-मन्थन' की भव्य झाँकी उभर चुकी है।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

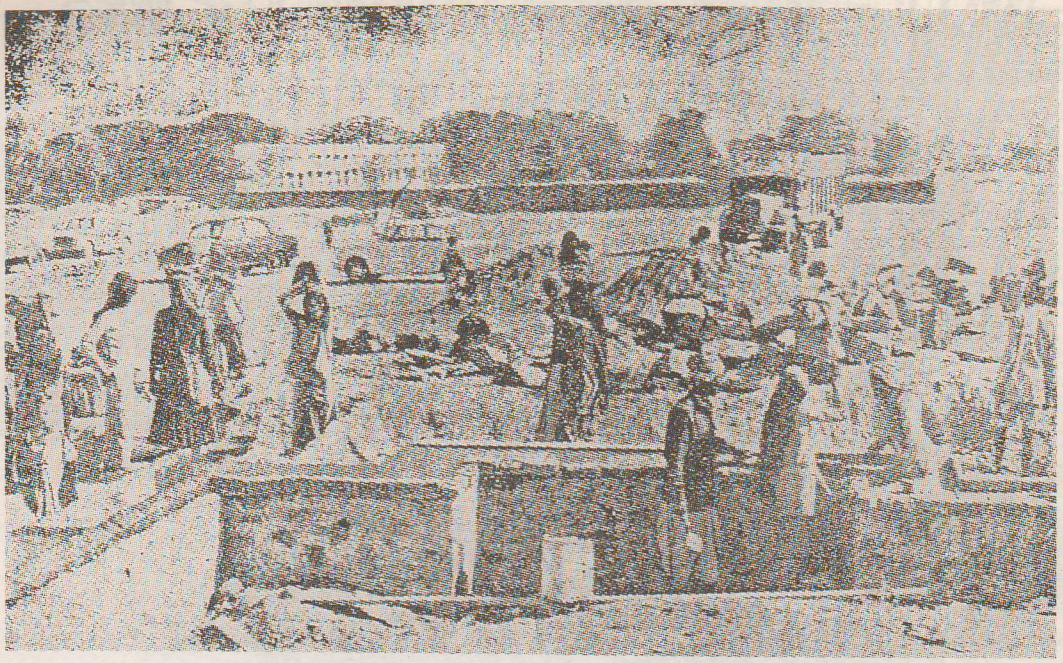

मन्दिरों की 13 फुट ऊंची पिलंथ के निर्माण का आरम्भिक दृश्य।

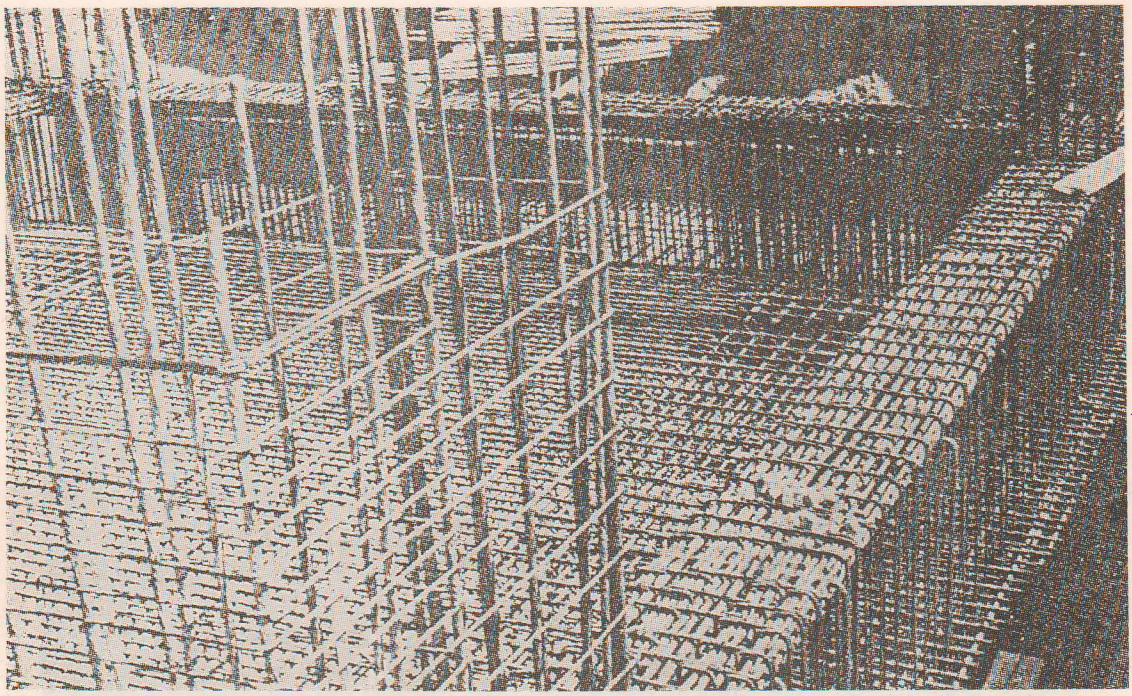

महाराजा अग्रसेन के मन्दिर को हजारों वर्ष तक मजबूती से संभाले रखने वाली बुनियाद और उसमें लगे स्टील (सरियों) के जाल की एक झलक।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

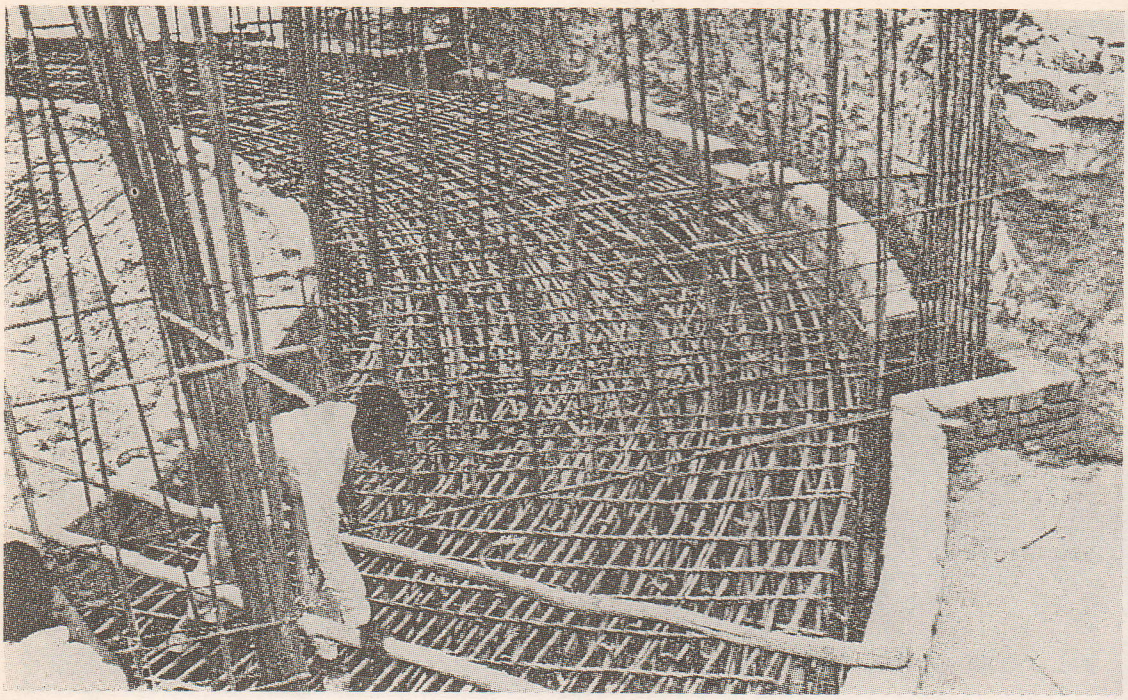

महालक्ष्मी जी के मन्दिर की 'पायल फाउण्डेशन' के ऊपर की बुनियाद में लगे सरियों के जाल का दृश्य। आगे चलकर सरस्वती जी के मन्दिर में भी इसी प्रकार पायल फाउण्डेशन करवाई गई।

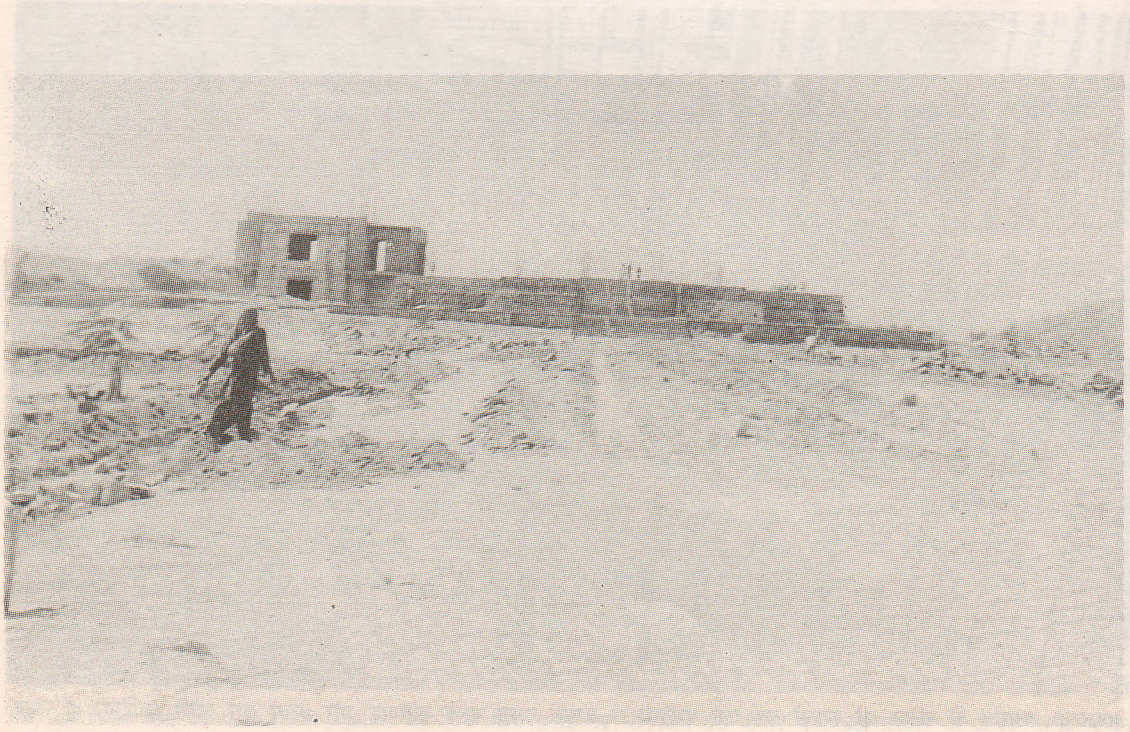

धूल और मिट्टी के बीहड़ में ऊपर उठता हुआ महाराजा अग्रसेन का मन्दिर।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

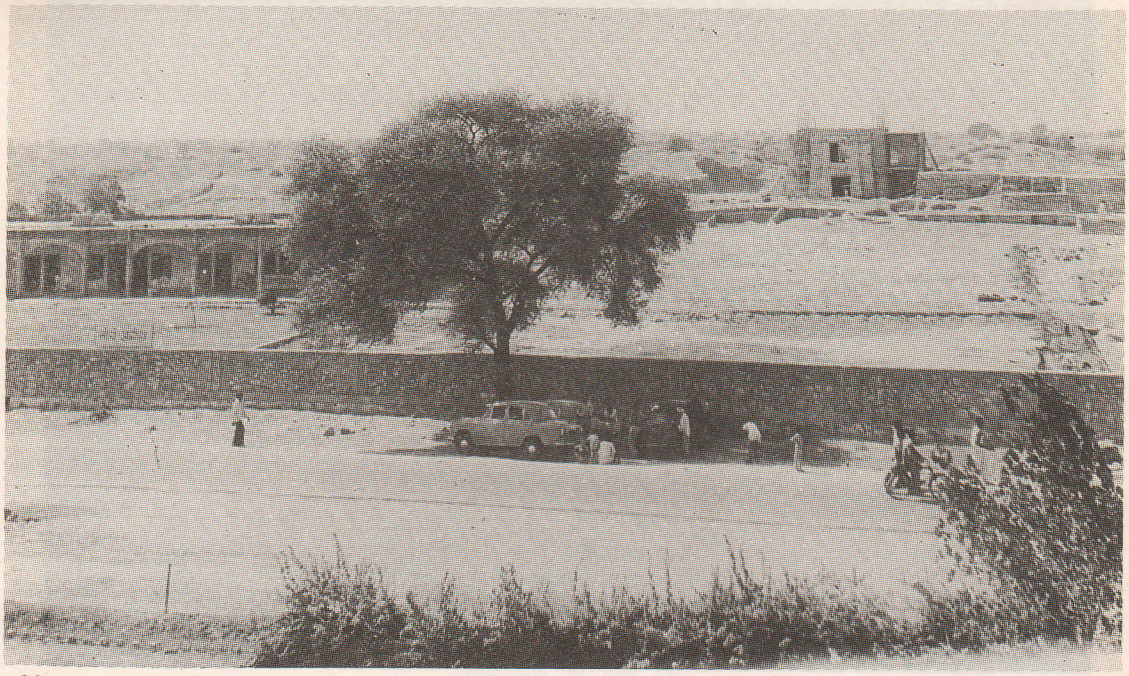

लीजिए अब अग्रोहा-धाम के बाहर की सड़क (राजमार्ग नं.-10 नया नाम 'महाराजा अग्रसेन राज मार्ग') के साथ-साथ पत्थरों की दीवार भी बन गई।

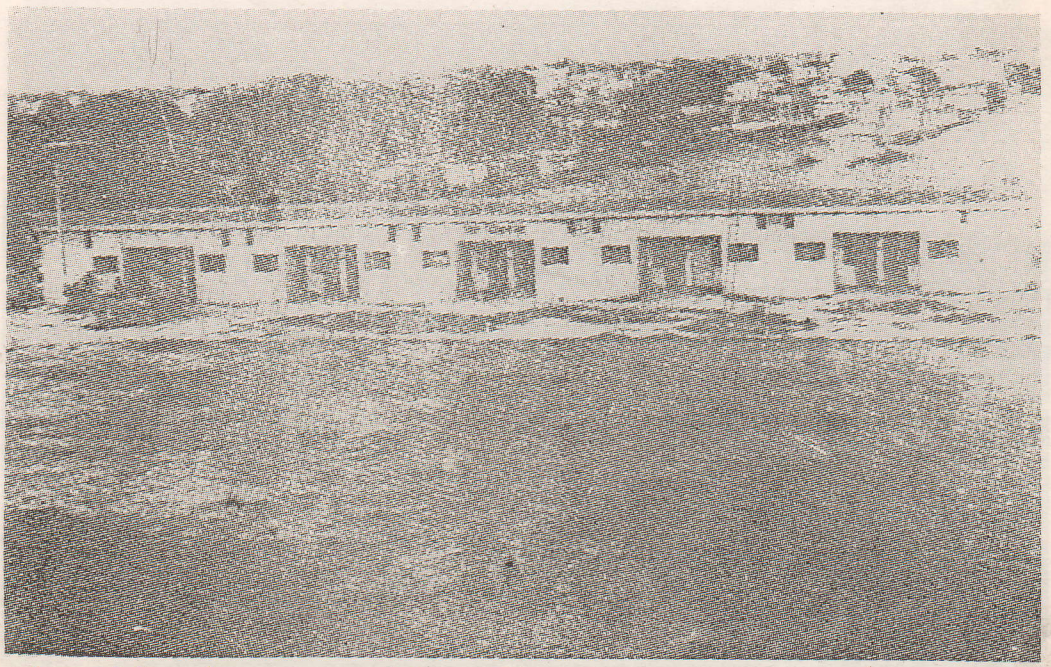

10 कमरों का यात्री-निवास भी पूरा हुआ। हर कमरे के साथ रसोई तथा बरामदा बनवाया गया। साथ ही संयुक्त स्नानागार व शौचाल्य भी बने।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

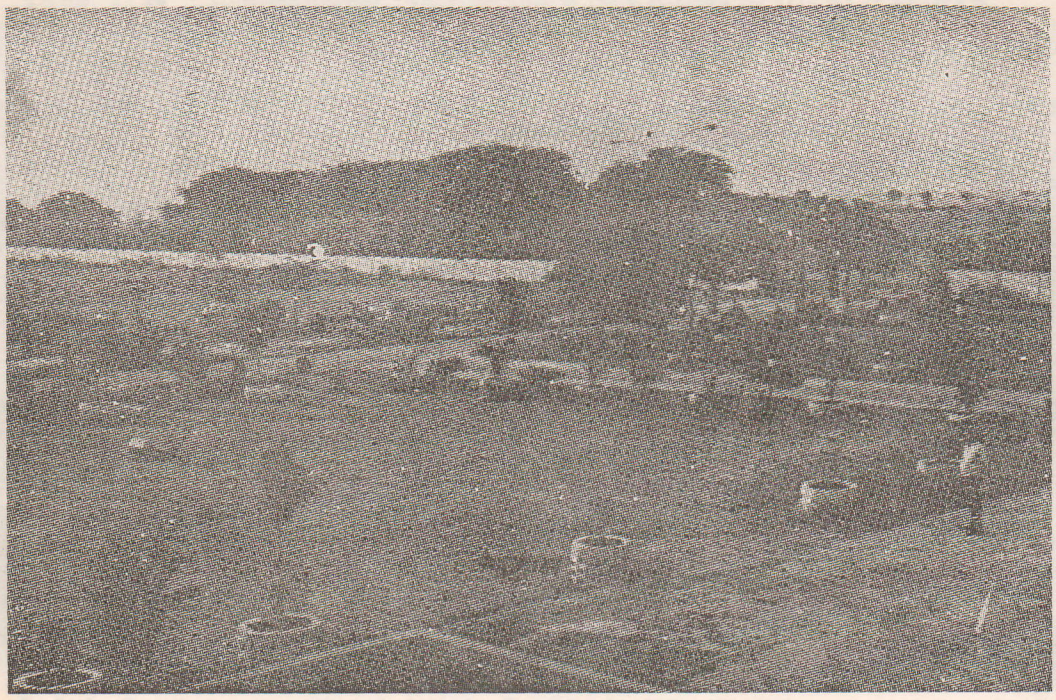

बड़ी मुश्किल से लाए हैं मँझधार से किश्ती को निकालकर। जहाँ कल ऊबड़-खाबड़ धरती पर धूल उड़ने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था, आज वहाँ पार्क बन चुके हैं। उनमें मखमली घास बिछी हुई है। पेड़-पौधे लहलहा रहे हैं। फुलवाड़ी खुशबू बखेर रही है। चारों तरफ हरियाली-ही-हरियाली है।

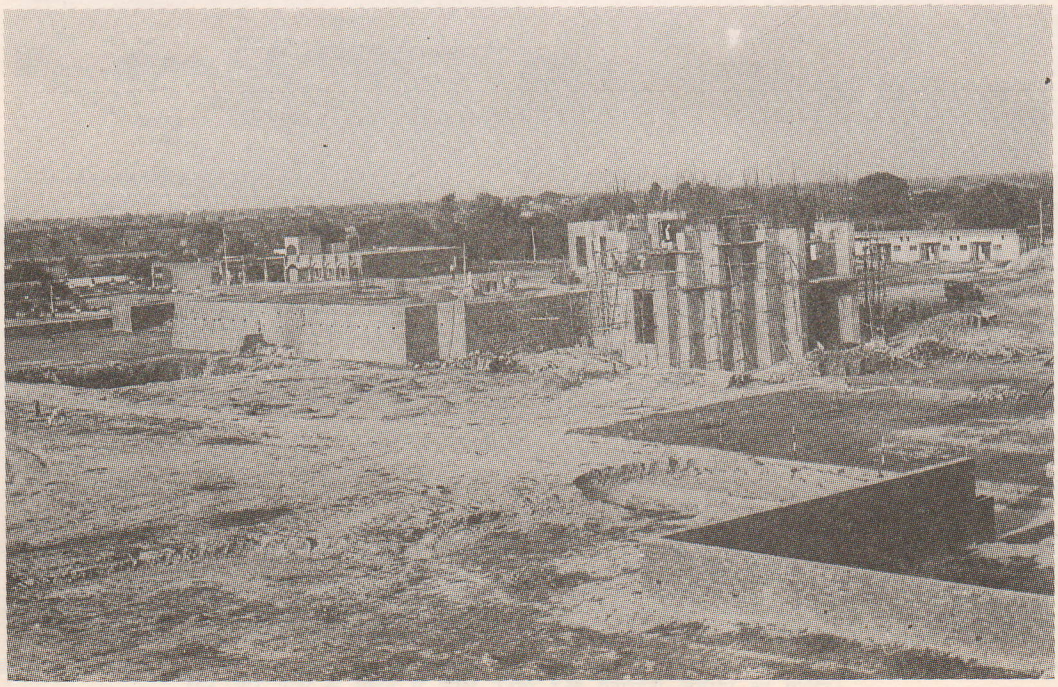

महालक्ष्मी जी के मन्दिर का निर्माण आरम्भ हुआ।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

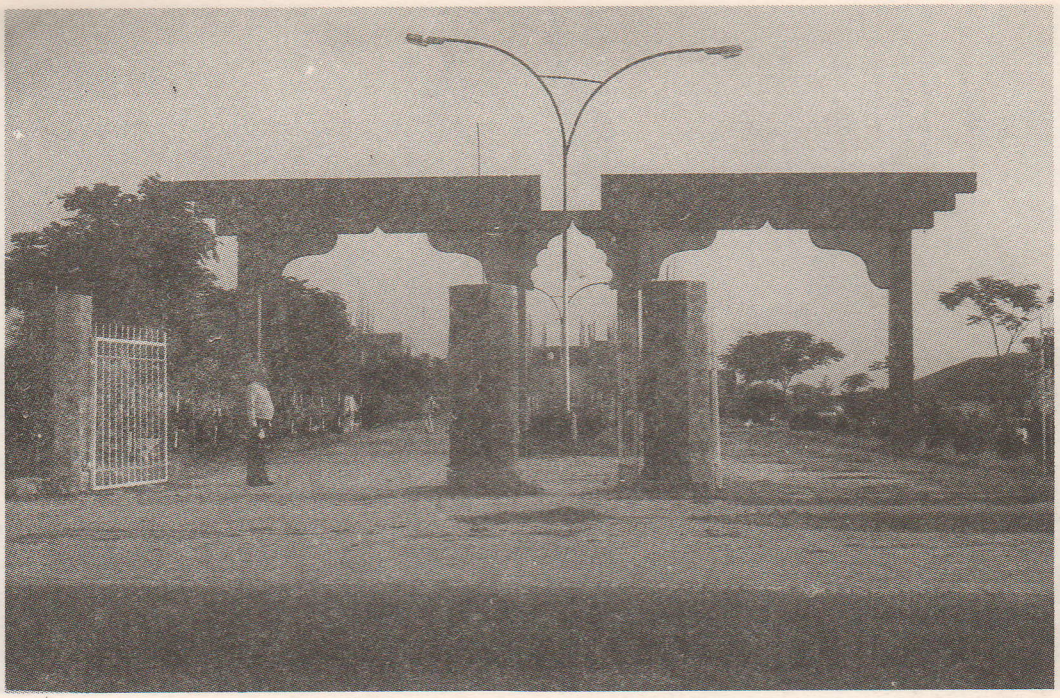

अग्रोहा-धाम का मुख्य द्वार

दोमंजिली विशाल और भव्य धर्मशाला का एक भाग

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

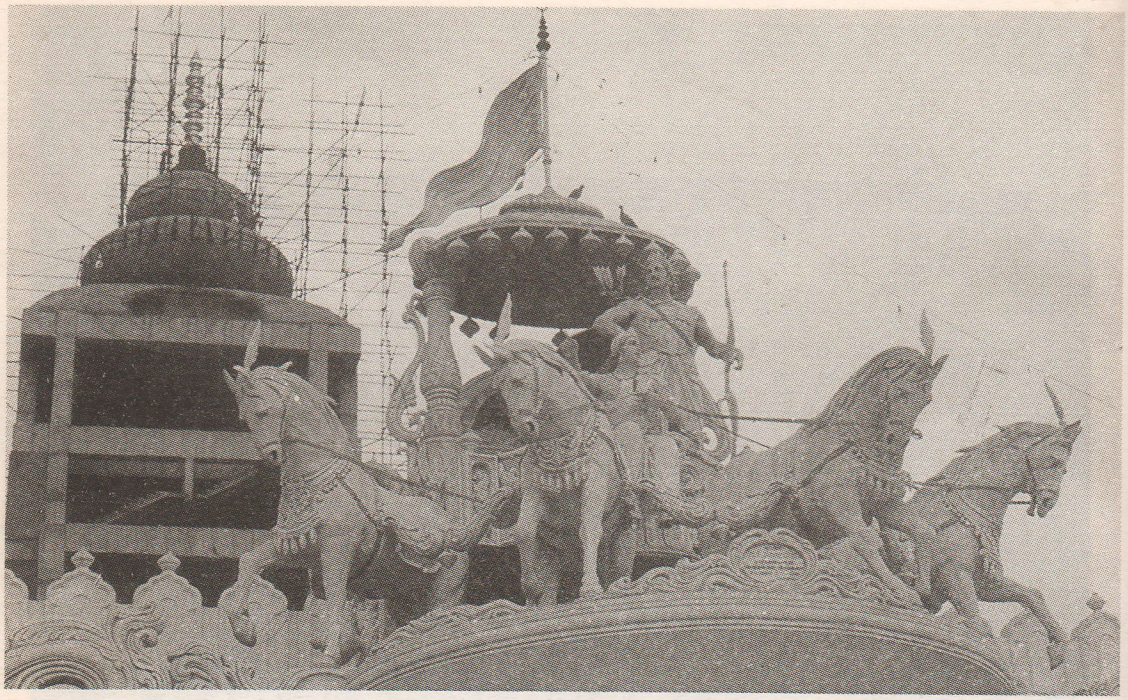

मन्दिर के मुख्य द्वार के ऊपर बना गीता-संदेश।

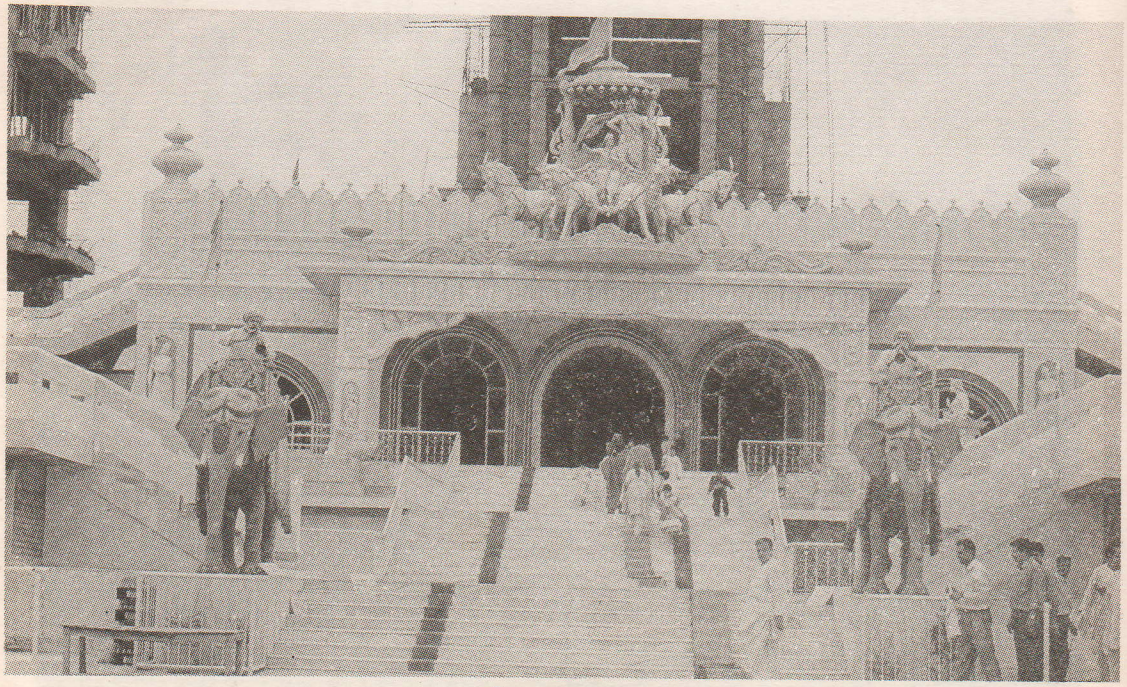

मन्दिर का मुख्य द्वार

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

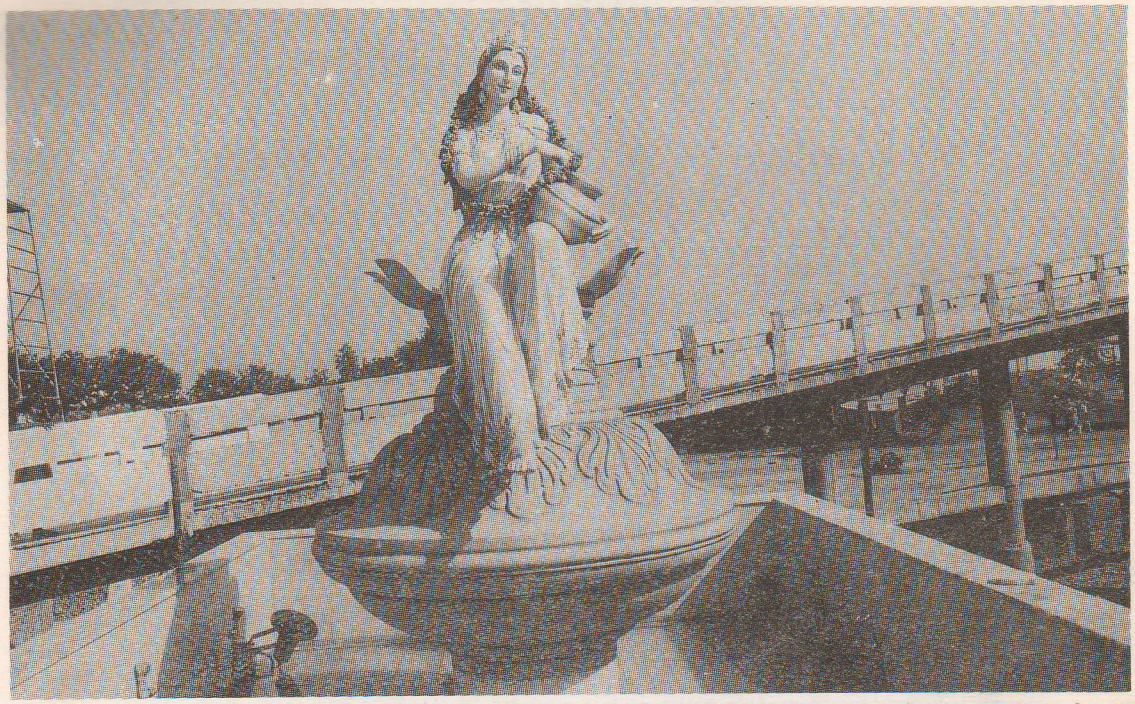

मन्दिर के मुख्य द्वार के बाहर बाईं ओर गंगा मां की प्रतिमा, प्रतिमा के पीछे मन्दिर के ऊपर जाने का मार्ग (रैम्प) दिखाई दे रहा है।

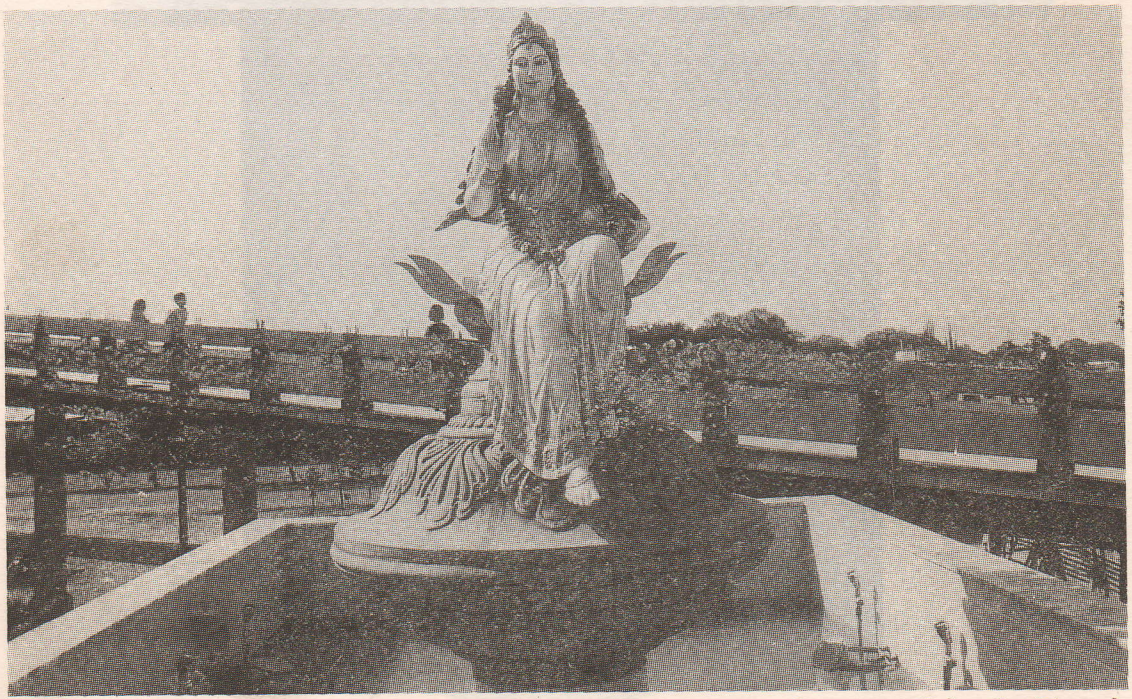

मन्दिर के मुख्य द्वार के बाहर दाईं ओर यमुना मां की प्रतिमा, प्रतिमा के पीछे, मन्दिर के ऊपर जाने का दूसरा मार्ग (रैम्प) दिखाई दे रहा है।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

अग्रोहा के खेड़े (थेह) की यात्रा करते हुए यात्रीगण।

अग्रोहाधाम का निर्माण आरम्भ करने से पूर्व यहाँ कुछ भी तो नहीं था। आरम्भ में अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कालेज सोसायटी द्वारा बनाए गए 2-3 कमरों की हालत भी खराब हो चुकी थी।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

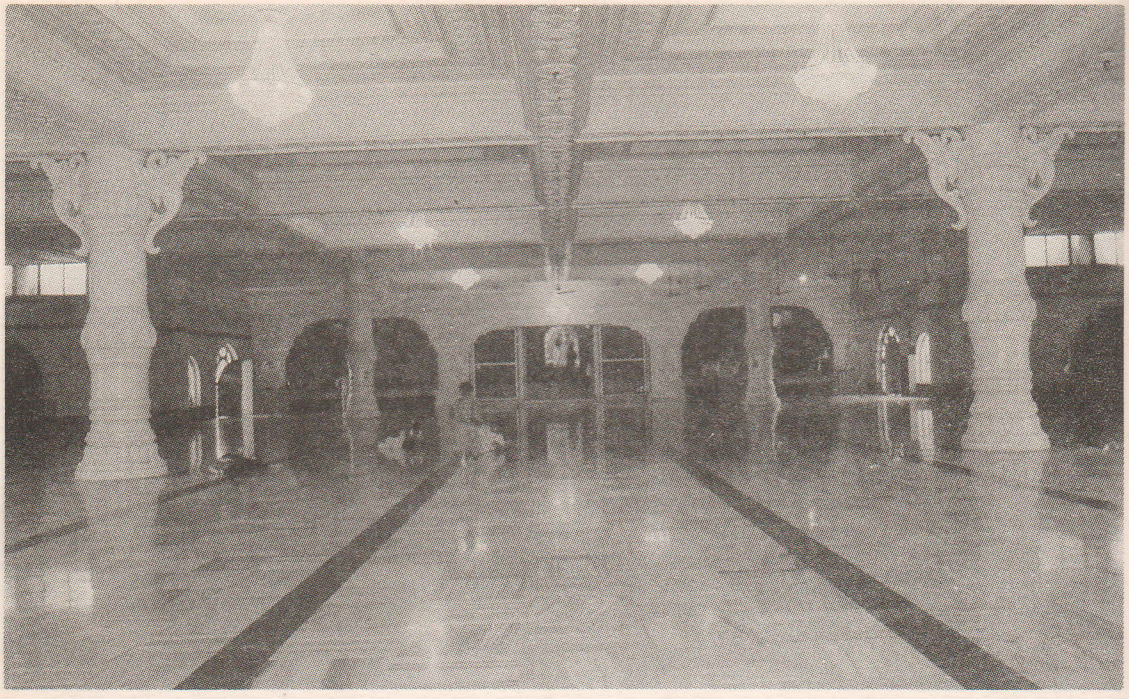

तीनों मन्दिरों के सामने बना हुआ विशाल और भव्य हाल। इसमें 5000 से भी अधिक व्यक्ति बैठकर सत्संग कर सकते हैं, सभा कर सकते हैं।

महालक्ष्मी जी का मन्दिर

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

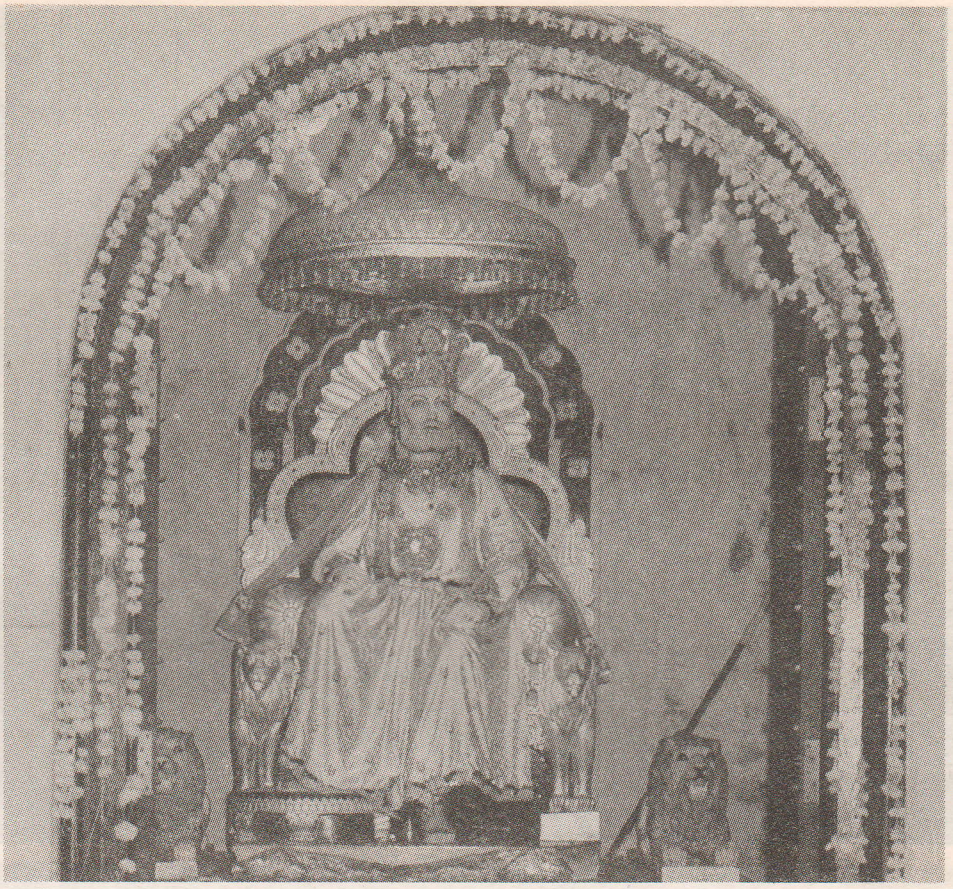

महाराजा अग्रसेन जी का मन्दिर

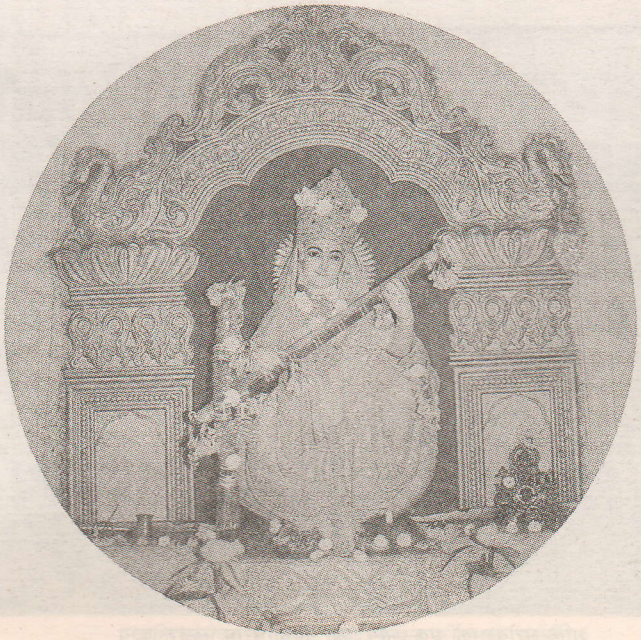

सरस्वती जी का मन्दिर

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

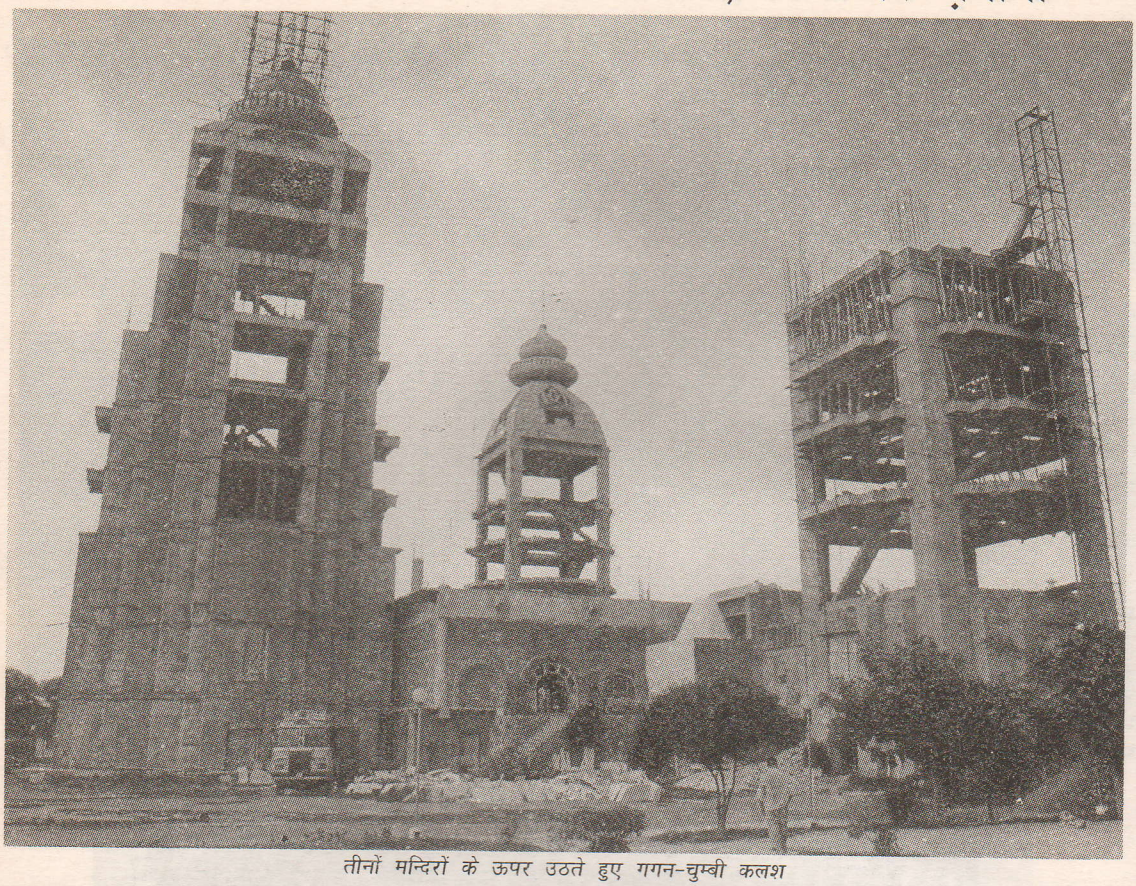

तीनों मन्दिरों के ऊपर उठते हुए गगन-चुम्बी कलश

शक्ति-सरोवर के एक भाग का नयनाभिराम सुन्दर दृश्य

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

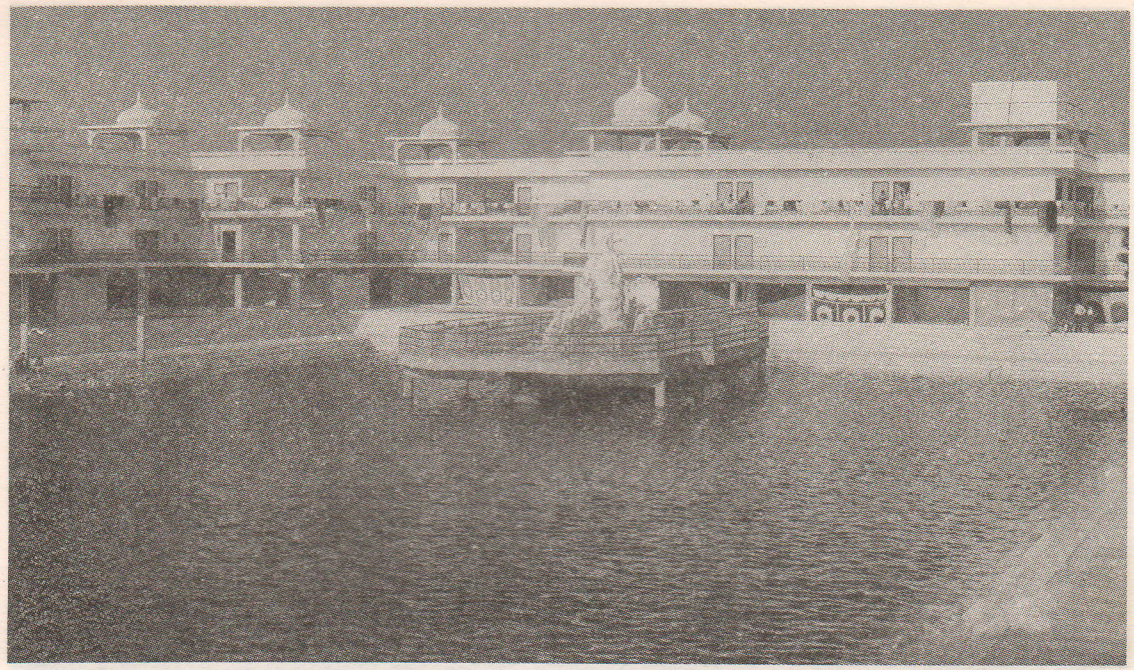

शक्ति-सरोवर के दूसरी ओर का दृश्य। सामने समुद्र-मन्थन की झांकी और पानी की टंकी दिखलाई दे रही है।

शक्ति-सरोवर में बनी समुद्र-मन्थन की भव्य झांकी।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

तन और मन के साथ धन भी आवश्यक है। शक्ति-सरोवर के निर्माणार्थ दान-दाताओं के नामों की पत्थरों पर खुदी सूचियाँ।

अग्रोहा-धाम परिसर में बनाए गए वाटर-वर्क्स के पानी का हौज़।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

पानी लिफ्ट करके, शक्ति-सरोवर पर बनी इन टंकियों में भरा जाता है। इन टंकियोंं के माध्यम से सारे परिसर में पानी उपलब्ध है।

शक्ति सरोवर का बाह्य दृश्य।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

मारुतिनंदन – हनुमान जी का मन्दिर।

भोलेशंकर–'गंगा वितरण' का एक दृश्य।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

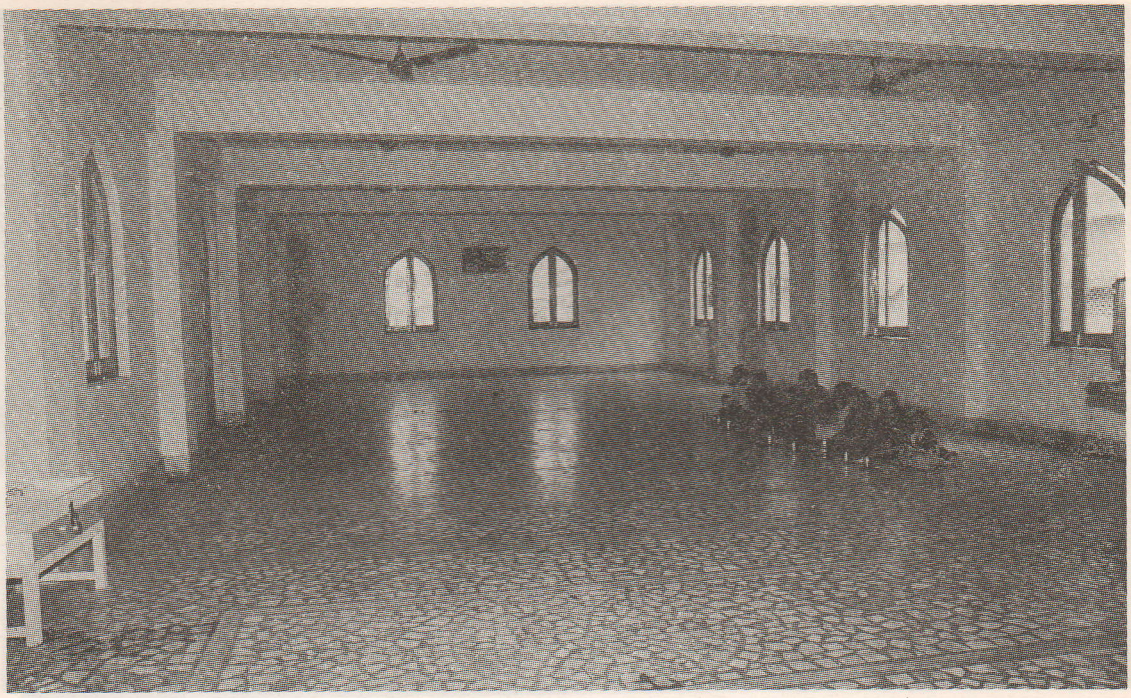

भोजन करने के लिये विशाल-डाइनिंग हाल।

डाइनिंग हाल का बाह्य दृश्य।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

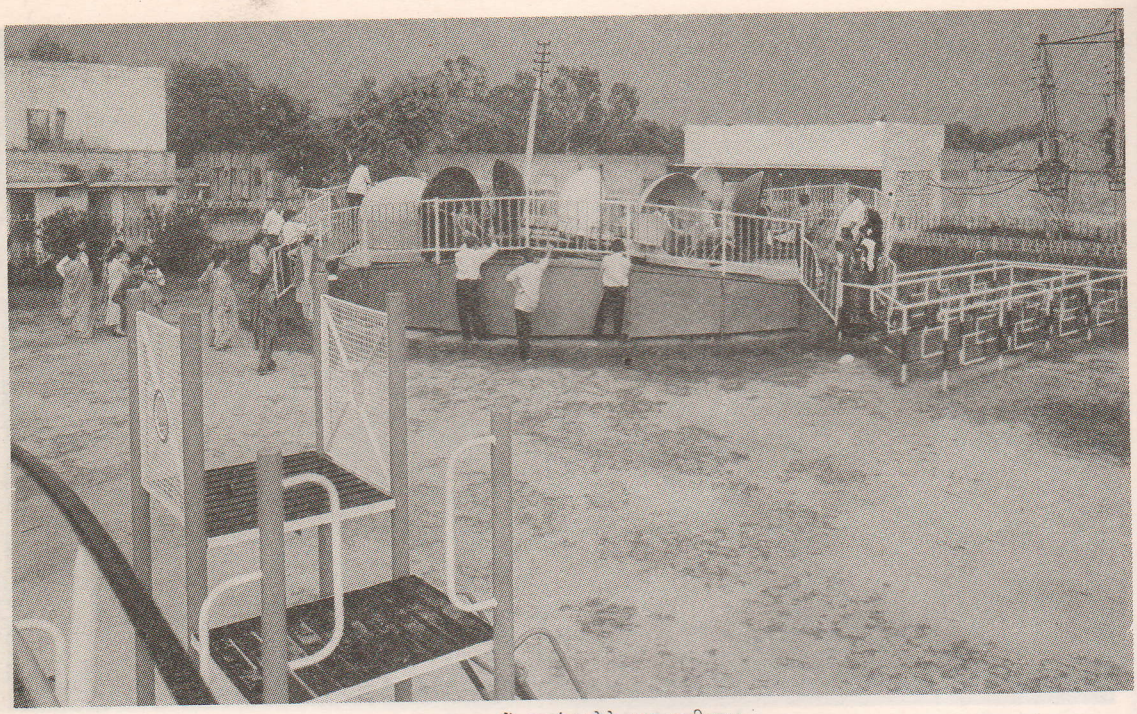

अप्पू घर में आनंद लेते हुए यात्रीगण।

अप्पू-घर में आकाश भ्रमण करते हुए यात्री।

अग्रोहाधाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की ज़बानी

अग्रोहा-धाम में बना बृजभवन।

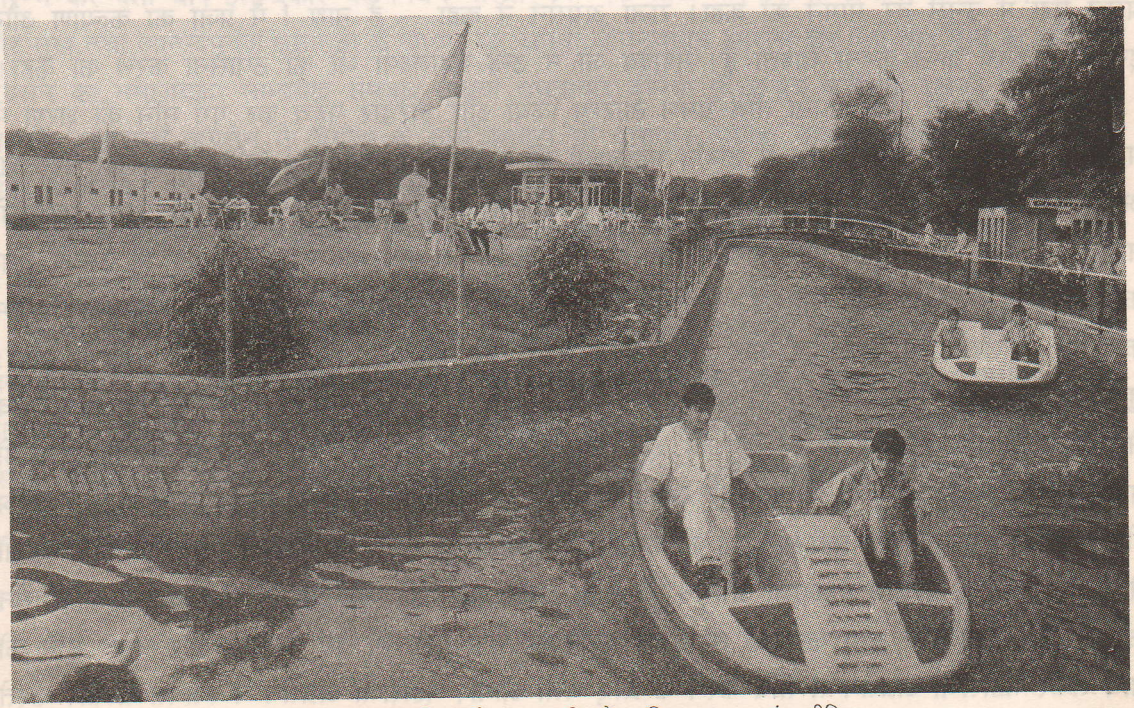

अग्रोहा-धाम पधारिए और आप भी नौका विहार का आनंद लीजिए।

महाराजा अग्रसेन

अग्रवंश शिरोमणि महाराजा अग्रसेन का जन्म लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व प्रताप नगर में हुआ था। उनके पिता का नाम राजा बल्लभ और दादा का नाम राजा महीधर था।अग्रसेन के जन्म के पश्चात् ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि यह नवजात शिशु बड़ा होकर बहुत नाम कमाएगा। इसकी बुद्धि बहुत विलक्षण होगी। अग्रसेन धीरे-धीरे बड़े होने लगे। उन्होंने राज-काज के साथ अस्त्र-शस्त्र का शिक्षण प्राप्त करना भी आरम्भ कर दिया। कुछ समय में ही वह अस्त्र-शस्त्र चलाने में दक्ष हो गए।

महाराजा अग्रसेन की 18 रानियाँ थीं, 54 पुत्र थे और 18 कन्याएँ थीं। उनकी प्रमुख रानी का नाम माधवी था। माधवी नागराज कुमुद की कन्या थी। माधवी से देवताओं के राजा इन्द्र भी विवाह करना चाहते थे। परन्तु माधवी का विवाह जब अग्रसेन से हो गया तो इन्द्र अग्रसेन पर कुपित हो गए। कुपित होकर उन्होंने अग्रसेन के राज्य में वर्षा बन्द कर दी। वर्षा न होने से राज्य में सूखा पड़ गया और जनता प्यास से व्याकुल हो उठी और भूखों मरने लगी। साथ ही इन्द्र ने युद्ध भी आरम्भ कर दिया। लेकिन महाराजा अग्रसेन ने हिम्मत नहीं हारी, वे निरन्तर युद्ध करते रहे। राजा इन्द्र उन्हें पराजित नहीं कर सके। अंत में भगवान ब्रह्मदेव ने दोनों को युद्ध से रोका और दोनों को अपने-अपने राज्य में वापिस लौटा दिया।

राज्य की दुर्दशा को देखकर राजा अग्रसेन ने तप करने का विचार बनाया। माधवी को राज्य की बागडोर संभालकर तीर्थ यात्रा पर चले गए। अनेक तीर्थों की यात्रा करने के पश्चात् वह काशी में कपिल धारा-नामक तीर्थ पर पहुँचे। वहाँ उन्होंने महादेव जी का यज्ञ किया और घोर तपस्या की। महादेव जी प्रकट हुए और प्रसन्न मुद्रा में उनसे वर माँगने को कहा। राजा अग्रसेन ने कहा – हे नाथ ! मैं प्रजा का कल्याण और इन्द्र पर विजय प्राप्त करना चाहता हूँ। महादेव जी ने उन्हें महालक्ष्मी जी की उपासना करने को कहा।

राजा अग्रसेन ने पुनः अपना तीर्थ-भ्रमण आरम्भ किया और हरिद्वार पहुँच कर गर्ग मुनि की शरण में पहुँचे। वहाँ गर्ग मुनि के सानिध्य में उन्होंने महालक्ष्मी की उपासना आरम्भ की। (हरिद्वार में जहाँ महाराजा अग्रसेन ने उपासना की थी वह वही स्थान है जहाँ "महाराजा अग्रसेन घाट" बना हुआ है)। उधर महारानी माधवी को जब मालूम हुआ कि महाराजा अग्रसेन हरिद्वार में घोर तप कर रहे हैं तो वह भी उनकी सेवा करने के लिए स्वयं हरिद्वार चली गई। महाराजा अग्रसेन के साथ उन्होंने भी महालक्ष्मी की आराधना आरम्भ कर दी। महालक्ष्मी जी प्रकट हुई और प्रसन्न होकर माँ ने वर दिया – अग्रसेन ! इन्द्र तेरे वश में होगा। तुम्हारे राज्य के सब संकट अब दूर हो जाएँगे। तेरे वंश में कोई दुःखी नहीं होगा। तुम्हारा वंश सदा धन-वैभव से परिपूर्ण रहेगा। आज से मैं तेरे वंश की कुल देवी बनकर तेरी और तेरे वंश की रक्षा करूंगी। साथ ही महालक्ष्मी जी ने आदेश दिया कि कौलपुर जाकर नागराज की कन्याओं से विवाह करो। राजा अग्रसेन प्रसन्न होकर वहाँ से कौलपुर गए। वहाँ नागराज की कन्याओं से धूमधाम के साथ विवाह किया। नागराज की कन्याओं से विवाह करने के पश्चात् महाराजा अग्रसेन की शक्ति अथाह बढ़ गई। जब इन्द्र को महालक्ष्मी द्वारा अग्रसेन को वर दिए जाने और नाग कन्याओं से विवाह करने का पता चला तो वह घबराया और नारद मुनि को साथ लेकर महाराजा अग्रसेन से संधि करने के लिए चला आया। महाराजा अग्रसेन ने स्वागत-सत्कार करते

हुए इन्द्र को गले लगाकर वैमनस्य का त्याग कर दिया।

महालक्ष्मी से अभय वर पाकर अग्रसेन ने फिर से अपने राज्य का पुनर्गठन किया और अपनी कीर्ति को चारों ओर फैलाया।

महाराजा अग्रसेन ने अपने राज्य को 18 राज्यों में विभक्त किया। अग्रोहा को राजधानी बनाया। राज्य के शासन और व्यवस्था के लिए लोकतन्त्र की पद्धति का प्रचलन किया। अठारह राज्यों के प्रमुखों पर आधारित एक जन-परिषद् का गठन किया। इस प्रकार गणतंत्र शासन की स्थापना की।

गणतंत्र की स्थापना के पश्चात् महाराजा अग्रसेन के मन में यज्ञ करने का विचार उत्पन्न हुआ। उन्होंने एक-एक करके सत्रह यज्ञ किए। इन यज्ञों में पशुबलि दी जाती थी। पशुबलि को देखकर उनका मन खिन्न हो गया। उन्हें घृणा हो गई। पशुओं की चीत्कार सुनकर उनका हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने अट्ठारहवाँ यज्ञ बीच में ही रोक दिया और यज्ञ करने का संकल्प छोड़ दिया। उन्होंने कहा कि प्रतिष्ठा किसी की जान लेने से नहीं बढ़ती अपितु उनकी रक्षा करने से अथवा अपनी जान देने से बढ़ती है। इसलिए उन्होंने अपने राज्य में हिसां न करने, प्राणीमात्र की रक्षा करने, अहिंसा को जीवन में धारण करने और शाकाहारी भोजन करने का नियम बनाया।

महाराजा अग्रसेन समाजवाद के आदि सूत्रधार और प्रवर्तक थे। अग्रोहा में एक लाख परिवार बसते थे। जब कोई व्यक्ति किसी कारणवश निर्धन हो जाता था अथवा निर्धनता की हालत में कोई व्यक्ति बाहर से आकर अग्रोहा में बसता था तो नियम के अनुसार, अग्रोहा के एक लाख परिवार, उस व्यक्ति को एक-एक मुद्रा और एक-एक ईंट देते थे। इस प्रकार उस निर्धन व्यक्ति के पास एक लाख मुद्राएं और एक लाख ईंटें पहुँच जाती थीं। एक लाख ईंटों से वह अपना घर बना लेता था और एक लाख मुद्राओं से वह अपना व्यापार आरम्भ कर देता था। इस प्रकार वह निर्धन परिवार भी एक लाख परिवारों के समान, प्रतिष्ठित, प्रसन्नता और सुख तथा आनन्दपूर्वक समानता के आधार पर अपना जीवनयापन आरम्भ कर देता था। ऐसा था महाराजा अग्रसेन का समाजवाद, साम्यवाद समवाद अथवा समतावाद दुनिया में अन्यत्र कहीं भी इसकी मिसाल नहीं मिलती। महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा के साथ आगरा भी बसाया। अग्रोहा नगर के बीच में महालक्ष्मी का मंदिर बनवाया। जहाँ सभी लोग महालक्ष्मी की पूजा करते थे।

महाराजा अग्रसेन जब वृद्धावस्था को प्राप्त हुए तो अपना राज्य अपने पुत्र विभु को सौंपकर तप करने के लिए चले गए।

महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा तथा अग्रवाल के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र द्वारा रचित ''अग्रवालों की उत्पति'', डॉ. सत्यकेतू विद्यालंकार द्वारा रचित ''अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास'', डॉ. स्वराज्यमणि अग्रवाल द्वारा रचित ''अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल'', श्री गिरिराज प्रसाद मितल द्वारा रचित ''महाराजा अग्रसेन का जीवन चरित्र'' आदि ग्रन्थों का अध्ययन करें ।

अग्रोहा

अग्रोहा दिल्ली से 190 किलोमीटर दूर, राजमार्ग नं०-10, (महाराजा अग्रसेन राज-मार्ग) हिसार-सिरसा रोड के किनारे पर एक खेड़े के रूप में स्थित है। दिल्ली से बहादुरगढ़, साँपला, रोहतक, हाँसी तथा हिसार होते हुए अग्रोहा पहुँचते हैं।

अग्रोहा अपने समय का एक विशाल, भव्य समृद्धिशाली नगर था। इसकी समृद्धि और कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी। जब चारण-भाट इसकी यश-गाथा गाते थे तो सुनने वालों की रगों में वीर-रस प्रवाहित होने लगता था। इसकी हरित भूमि और समृद्धि ने विदेशियों को सदा आकर्षित किया। फलस्वरूप बार-बार इस धरती पर यूनानी, शक, हूण, कुषाण और ईरानियों के आक्रमण होते रहे। अग्रोहा का यह गणराज्य अपनी वीरता के कारण सदा विदेशियों से लोहा लेता रहा और अपने नगर की रक्षा में सदैव संलग्न रहा। बार-बार के युद्ध से अग्रेय गणराज्य की अपार जनहानि हुई। इससे उनकी शक्ति कम होती गई। लोग नगर छोड़-छोड़ कर जाने लगे। अंत में मोहम्मद गौरी के आक्रमण ने यहाँ के निवासियों को सदा-सदा के लिये अपना देश छोड़ने पर मजबूर कर दिया। जान-माल को लेकर अग्रोहा के लोग, अग्रोहा के निवासी अग्रोहा से निकलकर, पलायन करते हुए आगे बढ़े और आसपास के क्षेत्रों जेसे राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि में जहाँ जिसके सींग समाए, वहीं बस गए। आगे चलकर धीरे-धीरे देश के सभी भागों में फैल गए। महाराजा अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा के निवासी होने के नाते सब लोग अपने आपको 'अग्रवाल' कहने लगे।

अग्रोहा न जाने कितनी बार बसा और कितनी बार उजड़ा। अब यह एक लम्बे समय से एक खेड़े (थेह) के रूप में दबा हुआ कराह रहा था। पुकार-पुकार कर आर्तनाद कर रहा था- "हे मेरे वंशजो! तुमने देश के निर्माण और उसके विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। तुम जहाँ भी गए हो, वहाँ ही बसे हो, वहीं तुम्हें लक्ष्मीजी का आर्शीवाद प्राप्त हुआ है। तुमने स्थान-स्थान पर पूजा करने के लिये मन्दिर बनवाए हैं, यात्रियों की सुख-सुविधाओं के लिये धर्मशालाएँ बनवायी हैं, शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिये स्कूल और कालेज खोले हैं साथ ही लोगों के रोग निवारणार्थ चिकित्सालयों एवं औषधालयों की स्थापना की है। परन्तु अब तुम मेरी ओर भी देखो। मेरा भी पुनरोत्थान और पुनर्निर्माण करो।"

अग्रोहा की इस टीस को सबसे पहले सुना स्वामी ब्रह्मानंद ने। अग्रोहा के पुनरोत्थान के लिये स्वामी ब्रह्मानन्द ने स्थान-स्थान पर घूम-घूम कर अग्रवालों में भावना भरी। उनकी प्रेरणा से सन् 1915 में भिवानी के सेठ भोलाराम डालमिया तथा साँवराम ने अग्रोहा में एक गौशाला की स्थापना की तथा ई० सन् 1939 में सेठ रामजीदास बाजोरिया कलकत्ता वालों ने यहाँ एक धर्मशाला तथा मन्दिर का निर्माण कराया। तत्पश्चात् कलकत्ता के हलवासिया ट्रस्ट ने गौशाला के निकट एक कुआँ और

सन् 1939 में सेठ रामजीदास बाजोरिया द्वारा बनाई गई धर्मशाला और मन्दिर

प्याऊ बनवाई। श्री कालीचरण केशान के प्रयत्नों से बाजोरिया परिवार ने डेढ़ लाख रूपये प्रदान कर इस धर्मशाला का सन् 1992 में जीर्णोद्धार करवाया।

स्व. मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल तथा उनके साथियों ने ई. सन् 1965 में महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कालेज सोसायटी के माध्यम से अग्रोहा में जमीन खरीदी।

नींव का पत्थर

श्री रामेश्वरदास गुप्त

श्री रामेश्वरदास गुप्त ने मार्च 1973 में मंगल-मिलन (मासिक) पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। मंगल-मिलन के तत्त्वावधान में नवम्बर 1974 में दिल्ली में देश-भर की अग्रवाल पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशकों, प्रबन्धकों, सम्पादकों और पत्रकारों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित करने की योजना बनाई गई। उस सम्मेलन का उद्देश्य 'वर्तमान सामाजिक स्थिति में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका' पर विचार करना था। उस पत्रकार-सम्मेलन के लिये तैयारियाँ आरम्भ कर दी गई। देश-भर की अग्रवाल पत्र-पत्रिकाओं के प्रबन्धकों, सम्पादकों एवं पत्रकारों को निमंत्रण भेजे गए। अधिकांश की सहमति एवं स्वीकृति भी प्राप्त हो गई।

इसी बीच कुछ पत्रकारों और कार्य-कर्त्ताओं के सुझाव आए कि केवल पत्रकारों का सम्मेलन न करके अग्रवालों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया जाए। इस विषय पर विचार करने के लिये श्री रामेश्वरदास गुप्त ने एक जनवरी 1975 को दिल्ली की अग्रवाल-सभाओं के प्रतिनिधियों और समाजिक कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक धर्म-भवन, साउथ एक्सटैंशन, नई दिल्ली में बुलाई। उस बैठक के निर्णय अनुसार 5-6 अप्रैल 1975 को धर्मभवन साउथ एक्सटैंशन, नई दिल्ली में एक 'अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि-सम्मेलन' का आयोजन किया गया।

इस प्रकार देश-भर के अढ़ाई करोड़ अग्रवालों को एक सूत्र में बाँधने, एक मंच पर एकत्रित करने एवं एक झण्डे के नीचे लाने के लिये अखिल भारतीय अग्रवाल-सम्मेलन की स्थापना की नींव का पत्थर बना-''श्री रामेश्वरदास गुप्त धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संस्थापित मंगल-मिलन मासिक पत्रिका द्वारा प्रस्तावित पत्रकार-सम्मेलन''।

अग्रोहा को तीर्थ बनाने का सूत्रपात :-

5-6 अप्रैल 1975 को श्री रामेश्वरदास गुप्त द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अग्रवाल-प्रतिनिधि-सम्मेलन में 18 प्रस्ताव पास किये गए। उनमें से पाँचवाँ और नौवाँ प्रस्ताव अग्रोहा से सम्बंधित थे।

पाँचवें प्रस्ताव में कहा गया-''यह सम्मेलन केंद्रीय सरकार और हरियाणा सरकार से अनुरोध करता है कि अपने पुरातत्व विभागों से अग्रोहा (जिला हिसार-हरियाणा) के खण्डहरों की खुदाई पुनः आरम्भ कराए। इन खण्डहरों में ही महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल जाति का इतिहास छिपा हुआ है। इसके साथ ही यह प्रतिनिधि-सम्मेलन अग्रवालों की जन्मभूमि अग्रोहा का पुनरोत्थान करने का अनुरोध करता है।''

नौवें प्रस्ताव में कहा गया था-''यह सम्मेलन अग्रोहा को समस्त अग्रवालों का तीर्थस्थान घोषित करता है और सभी अग्रवालों से वहाँ की यात्रा करने का अनुरोध करता है। वहाँ प्रतिवर्ष अग्रसेन-मेला और अग्रसेन-महोत्त्सव का आयोजन हो, यह भी सम्मेलन का सुझाव है।''

प्रतिनिधि-सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। तत्पश्चात् पाँच महीने के बाद 6-7 सितम्बर 1975 को नागपुर में सम्मेलन की तदर्थ-समिति का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन द्वारा प्रतिनिधि-सम्मेलन में अग्रोहा से सम्बन्धित पारित हुए प्रस्तावों पर विचार करते हुए स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल को अग्रोहा में निर्माण-कार्य का संयोजक बनाया गया।

12 अक्टूबर 1975 को श्री श्रीकिशन मोदी, श्री रामेश्वरदास गुप्त, स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल, स्व. श्री देवकीनन्दन गुप्ता, श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल तथा श्रीमती स्वराज्यमणि अग्रवाल, मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल,स्व. श्री बाबूलाल सलमेवाले, वैद्य निरंजनलाल गौतम, श्री बलदेवराज अग्रवाल, श्री एम. एम. बंसल, श्री राधाशरण अग्रवाल तथा सिरसा के स्व. श्री गंगाबिशन एडवोकेट आदि अग्रोहा गए। सब लोगों ने अग्रोहा के टीले का सर्वेक्षण किया साथ ही उस भूमि का निरीक्षण भी किया जिसे तीर्थ के रूप में विकसित करना था।

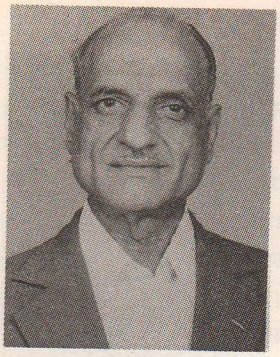

स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल स्व. श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल श्री बद्री प्रसाद अग्रवाल डा० स्वराज्यमणि अग्रवाल

सम्मेलन के लिये इन्कम-टैक्स में छूट का प्रमाण-पत्र (80-जी) प्राप्त करने के लिये श्री रामेश्वरदास गुप्त ने दिसम्बर 1975 में इन्कम-टैक्स विभाग के अधिकारियों से संपर्क किया। अधिकारियों ने सम्मेलन का विधान आदि देखकर बताया कि इस पर 80-जी का प्रमाण-पत्र नहीं मिल सकता। इसके लिये आप एक नया ट्रस्ट बना लीजिए। श्री रामेश्वरदास गुप्त ने अग्रोहा के निर्माण और विकास के लिये एक नया ट्रस्ट बनाने का विचार बनाया।

'अग्रोहा विकास-ट्रस्ट' की स्थापना :-

श्री रामेश्वरदास गुप्त ने अग्रोहा विकास-ट्रस्ट के विधान का प्रारूप तैयार किया। उस पर कई महीने तक मंथन चलता रहा। उसके बाद 8-9 मई 1976 को इन्दौर में अखिल भारतीय सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन में सम्मेलन की साधारण सभा ने 'अग्रोहा विकास-ट्रस्ट' के विधान का प्रारूप स्वीकार किया। साथ ही श्री रामेश्वरदास गुप्त को इस ट्रस्ट को दिल्ली में रजिस्टर कराने तथा इन्कम-टैक्स की औपचारिकताएँ पूरी करने के लिये प्राधिकृत किया। अग्रोहा विकास-ट्रस्ट का यह विधान 9 मई 1976 को प्रातः 8 बजे लागू हो गया।

इन्दौर अधिवेशन से लौटकर श्री रामेश्वरदास गुप्त ने अग्रोहा विकास-ट्रस्ट का विधान दिल्ली में सोसायटी रजिस्ट्रार के यहाँ पंजीकरण के लिये भेज दिया। 9 जुलाई 1976 को ट्रस्ट का पंजीकरण हो गया। (देखिए पृष्ठ 5)। इसके बाद इन्कम-टैक्स में धारा 12A के अंतर्गत पंजीकरण भी हो गया (देखिए पृष्ठ 6) तथा धारा 80-जी के अंतर्गत छूट का प्रमाण-पत्र भी प्राप्त कर लिया।

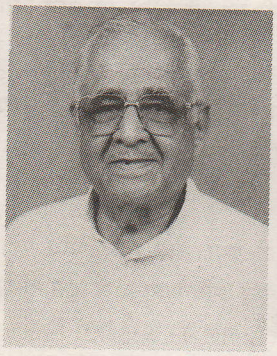

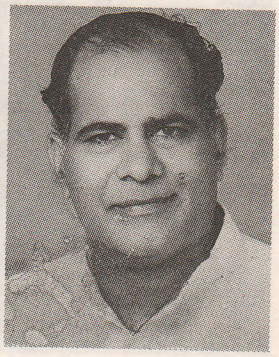

स्व. श्री देवीसहाय जिन्दल श्री बालकृष्ण गोयनका स्व० चुन्नीलाल अग्रवाल श्री श्रीकिशन मोदी

आरम्भ में ट्रस्ट के अध्यक्ष स्व. श्री देवीसहाय जिन्दल नई दिल्ली, मंत्री श्री रामेश्वरदास गुप्त नई दिल्ली, कोषाध्यक्ष स्व. श्री बृजलाल चौधरी मद्रास, सदस्य स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल मुम्बई, श्री श्रीकिशन मोदी नीम का थाना (राज.), श्री बालकृष्ण गोयनका मद्रास, स्व. श्री देवकीनन्दन गुप्ता दिल्ली, स्व. श्री चुन्नीलाल अग्रवाल हैदराबाद बनाये गए।

अग्रोहा में शिलान्यास-समारोह :-

शिलान्यास के लिये हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बनारसी दास गुप्त से प्रार्थना की गई पर वे अस्वस्थता के कारण अग्रोहा नहीं पधार सके। अखिल भारतीय अग्रवाल-सम्मेलन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री श्रीकिशन मोदी के सुझाव पर श्री रामेश्वरदास गुप्त ने पाँच ईंटे तैयार कवाईं। उन ईंटों को अपने छोटे भाई श्री कृष्णअवतार गुप्त और स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल के छोटे भाई श्री देवराज अग्रवाल के हाथ चण्डीगढ़ भिजवाया। मुख्यमंत्री ने उन ईंटों की शास्त्रीय ढंग से पूजा करवाई और अग्रोहा विकास-ट्रस्ट के कार्य के लिये अपना आर्शीवाद दिया। उन ईंटों को अग्रोहा लाकर बुनियाद में रखा गया। 29 सितम्बर 1976 को अग्रोहा में शिलान्यास समारोह का आयोजन किया गया। शिलान्यास अखिल भारतीय अग्रवाल-सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्रीकिशन मोदी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता ट्रस्ट के तत्कालीन अध्यक्ष स्व. श्री देवीसहाय जिन्दल ने की।

इस समारोह में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़, मध्यप्रदेश तथा दिल्ली आदि प्रदेशों के सैकड़ों स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया, जिनमें सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्रीकिशन मोदी, सम्मेलन और अग्रोहा विकास-ट्रस्ट के महामंत्री श्री रामेश्वरदास गुप्त, स्व० प्रो० रामसिंह, स्व० मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, स्व. श्री बशेशरनाथ गोटेवाले, स्व० वैद्य निरंजनलाल गौतम, श्री हरपतराय टांटिया, स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल, स्व. श्री रामकंवार गुप्ता तथा स्व. पं० मनुदत्त शर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

निर्माण के लिये भूमि प्राप्त :-

श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कालेज सोसायटी अग्रोहा (रजिस्टर्ड) के पदाधिकारियों ने 23 एकड़ भूमि अग्रोहा विकास-ट्रस्ट को निःशुल्क प्रदान की। उस भूमि की 5 अक्तूबर 1976 को रजिस्ट्रार दिल्ली के यहाँ विधिवत् रजिस्ट्री करवाई गई। दस्तावेज पर श्री अग्रसेन इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नीकल कालेज सोसायटी अग्रोहा (रजिस्टर्ड) की ओर से उसके अध्यक्ष स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल और महामंत्री स्व. श्री देवकीनन्दन गुप्ता ने हस्ताक्षर किए। (रजिस्ट्री के दस्तावेज़ की नकल देखिए पृष्ठ 7 से 12 तक) अग्रोहा विकास ट्रस्ट की ओर से उसके मंत्री श्री रामेश्वरदास गुप्त ने हस्ताक्षर किए। साक्षी के रूप में स्व. मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल और स्व. श्री बाबूलाल सलमेवाला ने हस्ताक्षर किए।

अग्रोहा में पानी की व्यवस्था :-

अग्रोहा तथा आस-पास के क्षेत्र का पानी खारा (नमकीन) होने के कारण वहाँ पीने के पानी की बहुत किल्लत थी। हरियाणा सरकार ने अग्रोहा में वाटर-वर्क्स का निर्माण आरम्भ किया था। वह वाटर-वर्क्स बहुत छोटा बनाया जा रहा था। इसके लिये श्री रामेश्वरदास गुप्त ने हरियाणा के तत्कालीन वित्तमंत्री श्री रामसरनचंद मित्तल से सम्पर्क किया। 30 जनवरी 1977 को श्री रामसरनचन्द मित्तल को लेकर श्री रामेश्वरदास गुप्त अग्रोहा गए। श्री मित्तल जी ने वाटर-विभाग के इंजीनियरों को भी अग्रोहा बुला लिया था। श्री मित्तल जी ने उस वाटर-वर्क्स को बड़ा बनवाने का आदेश दिया, ताकि वह वाटर-वर्क्स अग्रोहा तीर्थ और वहाँ लगने वाले मेलों में आने वाले यात्रियों के लिये पानी की आवश्यकता को पूरा कर सके। इस प्रयास से अग्रोहा का वाटर-वर्क्स चार-गुणा बड़ा बन गया।

अग्रोहा में वाटर-वर्क्स चालू होने के बाद पीने के पानी की समस्या तो हल हो गई, परन्तु निर्माण कार्य के लिये पानी की व्यवस्था अभी भी नहीं हुई।

स्व० बाबूलाल सलमेवाला

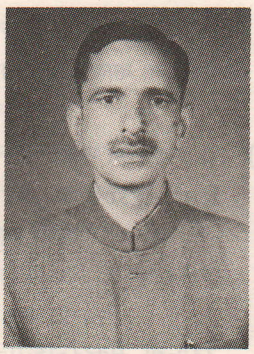

श्री हरपतराय टांटिया

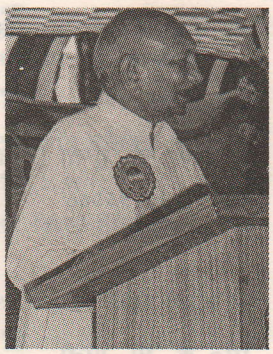

स्व० प्रो० रामसिंह

स्व० रामसरन चंद मित्तल

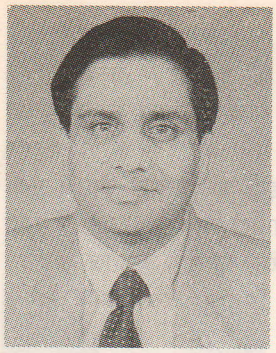

श्री सुरेश कुमार गुप्ता

श्री बलवंतराय तायल

स्व० श्री देवकीनन्दन गुप्ता

अग्रोहा निर्माणसमिति के तत्कालीन मंत्री श्री सुरेशकुमार गुप्ता ने अग्रोहा के आरम्भिक निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका तो निभाई ही, साथ ही उन्होंने अपने टैंकरों द्वारा हिसार से अग्रोहा पानी भेजने की व्यवस्था भी की।

30 अक्तूबर 1979 को श्री रामेश्वरदास गुप्त ने हरियाणा के तत्कालीन वित्तमंत्री श्री बलवंतराय तायल को अग्रोहा तीर्थ में आमन्त्रित किया। वहाँ श्री तायल को निर्माण-कार्य के लिये पानी की कठिनाई से अवगत कराते हुए पानी की उचित व्यवस्था करने का अनुरोध किया। श्री तायल ने निर्माण-विभाग के इंजीनियरों को आदेश दिया कि अग्रोहा-तीर्थ के निर्माणार्थ वाटर-वर्क्स की नाली से पानी दिया जाए। वाटर-विभाग के इंजीनियरों ने कहा कि वाटर-वर्क्स के लिये हमें मुख्य नहर से पानी मिले तो हम अग्रोहा तीर्थ को पानी दे सकते हैं। तब वाटर-वर्क्स वालों के लिये मुख्य नहर से पानी दिलवाने की व्यवस्था कराई गई। इसके बाद निर्माणार्थ पानी उपलब्ध होने लगा।

स्व. श्री चाननमल बंसल ने अपने अध्यक्षीय काल में अग्रोहा तीर्थ के लिये नहर से सीधा पानी लेने की हरियाणा सरकार से मंजूरी ले ली थी। इसके बाद श्री नंदकिशोर गोयनका ने इस काम को आगे बढ़ाया और नहर से सीधा पानी मिल गया।

धन-संग्रह का आरम्भ :-

आरम्भ में धन एकत्रित करने के लिये 100/- रुपये वाली, 10/- रुपये वाली और 5/- रुपये वाली हुण्डियाँ (दान-पत्र) प्रकाशित की गई। साथ ही संरक्षक-ट्रस्टी, आजीवन-ट्रस्टी, विशिष्ट-ट्रस्टी और वार्षिक-ट्रस्टी बनाए गए। दान-पत्रों तथा कमरों आदि पर दाताओं के नाम के पत्थर लगाकर धन एकत्रित किया गया।

निर्माण-समिति का गठन :-

निर्माण-कार्य के लिये 1977 में श्री वासुदेव अग्रवाल, स्व. श्री लालमन आर्य, श्री सुरेश कुमार गुप्ता, श्री शुभकरण चूरुवाला और श्री छबीलदास आदि पर आधारित एक निर्माण-समिति का गठन किया गया। साथ ही हिसार के बैंक में ट्रस्ट का खाता खोला गया। इस निर्माण-समिति में आगे चलकर समय-समय पर फेर-बदल होता रहा। उपरोक्त व्यक्तियों के अतिरिक्त आगे चलकर समय-समय पर अन्य अनेक व्यक्ति भी निर्माण-समिति के सदस्य रहे।

वर्तमान में निर्माण-समिति में निम्नलिखित व्यक्ति कार्य कर रहे हैं :-

1.	अध्यक्ष	**श्री गोवर्धन दास अग्रवाल**	अग्रवाल दाल उद्योग चुरूवाला कालोनी, हिसार
2.	कार्यकारी अध्यक्ष	**श्री आर. के. गुप्ता (इंजि०)** ☎ 32459, 35066	180-अरबन एस्टेट-II हिसार-125001
3.	महामंत्री	**प्रो० के. सी. गुप्ता**	730-बी, सैक्टर-15 ए, हिसार-125001

आर. के. गुप्ता

सदस्य

श्री देवराज एडवोकेट
☎ 34698, 38121
ऑपोजिटव-एलिएट क्लब
प्रीति नगर, हिसार

श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल
☎ 28575, 38589
मोहल्ला काज़ियां,
म०नं०-127, हिसार-125001

श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल
☎ 32169, 32269
19-तिलक बाजार
हिसार-125001

श्री ओम प्रकाश गोयल
☎ 31451
11/1, तिलक बाजार
गली-पी. धूनीचन्द, हिसार-1

श्री प्यारेलाल गोयल
☎ 36789, 34561
कटला रामलीला
हिसार-125001

श्री रमेश चन्द गुप्ता
☎ 33191
33 न्यू क्लॉथ मार्किट
हिसार-125001

श्री लाजपतराय गर्ग
देवराज जी एडवोकेट
अपोजिट एलिएट क्लब
प्रीति नगर, हिसार-125001

श्री रामकुमार रावालवासिया
☎ 32882, 39177
रावालवासिया हाउस
मण्डी रोड़, हिसार

श्री जगदिश जिंदल
☎ 75675, 62671
3 एम.सी. कालोनी
हिसार-125001

श्री दीपचन्द राजलीवाला
☎ 20144-46
194-प्रेमनगर
हिसार-125001

श्री सोहनलाल सिंगला
☎ 32698
कोठी नं. -123, सै०-15A
हिसार-125001

श्री प्रेमचन्द एडवोकेट
☎ 30543
635, अरबन एस्टेट-II
हिसार-125001

श्री राम भगत गुप्ता
☎ 32344, 32944
7-ग्रीन पार्क
हिसार-125001

श्री ओम प्रकाश जिंदल
☎ 20144-46
जिंदल हाउस, दिल्ली रोड
हिसार-125001 (हरियाणा)

श्री गोरी शंकर जैन
☎ 35598, 31598
पी. के. जैन एण्ड कम्पनी
रेलवे स्टेशन के पास
हिसार-125001

श्री बेगराज बंसल
☎ 42185, 42285, 42385
बेगराज प्रेमकुमार
117, नई अनाज मण्डी
आदमुर (हिसार)

श्री वेदप्रकाश गर्ग
☎ 20078
दुकान नं०-27, अनाज मण्डी
फतेहाबाद-125050

श्री शिवदत्तराय अग्रवाल
☎ 20078
भगेला भवन
मोहना मण्डी, हिसार-125001

श्री मेघराज गर्ग
☎ 31308, 20765
नवभारत ऑयल मिल
शिवाजी गली
दयानन्द कालेज रोड़ हिसार

श्री काँशीराम गोयल
☎ 34435, 38407
आजाद गली, गांधी चौक
हिसार-125001 (हरियाणा)

श्री पितरूमल गोयल
☎ 31768, 39068
गोयल भवन
112-मौ. चौधरियां
कटला रामलीला, हिसार-1

श्री कृष्ण गोयल
☎ 28115, 31362
शिवाजी गली, डी.एन.
कॉलेज रोड, हिसार-125001

श्री कैलाश चौधरी
☎ 31350, 34048
हमाम बिल्डिंग के पीछे
मोती बाजार, हिसार-125001

श्री रामनिवास गर्ग
☎ 20047, 21518
दुकान नं०-120, अनाज मण्डी
फतेहाबाद-125050 (हरियाणा)

श्री पवन कुमार (काला-पीला)
☎ 20074
मेम्बर ऑफ म्यूनिसिपल कमेटी
शास्त्री नगर, फतेहबाद-50

श्री सुरेश बंसल
☎ 20828, 22005
अध्यक्ष-युवा अग्रवाल सभा
अग्रवाल धर्मशाला मार्किट
फतेहाबाद-125050

श्री सीताराम अग्रवाल
☎ 21273
दुकान नं०-120, अनाजमण्डी
फतेहाबाद-125050 (हरियाणा)

श्री ब्रह्मानंद गोयल
☎ 3237
अध्यक्ष-अग्रवाल सभा
दुकान नं०-80A, भट्टू मण्डी

श्री महाबीर प्रसाद
(असरांवा वाला)
☎ 42080
दुकान नं०-75, अनाज मण्डी
आदमपुर जिला (हिसार)

श्री मदनलाल टाठी
☎ 50595, 50828
अजय कॉटन कम्पनी
जींद रोड, हांसी-125033

श्री सतपाल खाण्डावाला
☎ 50003, 50060
321, दिल्ली गेट
हांसी-125033

श्री आर. के. नरवानिया
☎ 20910 (घर), 20308 (का०)
20/V, विद्युत नगर
दिल्ली रोड, हिसार-125001

श्री श्याम नारायण गुप्ता
☎ 32551
336, अरवन एस्टेट-II
हिसार-125001

श्री विशन सिंगला
एस. बी. ऑफ इंडिया के पीछे
दिल्ली रोड, हिसार-125001

श्री हनुमान प्रसाद मित्तल
☎ 27613
विशनोई अस्पताल
तायल गार्डन, बरवाला रोड
हिसार-125001

निर्माण-कार्य

धर्मशाला :-

मई 1977 में स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल के संयोजन में निर्माण-कार्य शुरू किया गया। सर्वप्रथम धर्मशाला बनाने का कार्य हाथ में लिया गया। उसमें 22 कमरे और उन कमरों के सामने बरामदे बनाना आरम्भ किया।

अखिल भारतीय अग्रवाल-सम्मेलन के चौथे अधिवेशन में 11-12 नवम्बर 1978 को अग्रोहा के निर्माण-कार्य की समीक्षा की गई और श्री श्रीकिशन मोदी को अग्रोहा-निर्माण का संयोजक बनाया गया।

श्री श्रीकिशन मोदी ने जनवरी 1979 में बसंत पंचमी के दिन मन्दिर के निर्माण का कार्य आरम्भ कराया। इसके लिये उन्होंने ढाई लाख रूपये से भी अधिक धन जुटाया। दूसरी तरफ धर्मशाला के निर्माणार्थ धन जुटाने के लिये श्री रामेश्वरदास गुप्त ने अपने कुछ साथियों से सम्पर्क किया। श्री कालीचरण केशान से उन्होंने बात की। श्री केशान ने किरोड़ीमल ट्रस्ट की तरफ से 21,000/- रुपये प्रदान किये। श्री राधेश्याम गुप्त ने 21,000/-रुपये दिए। श्री मांगेराम गुप्ता निवर्तमान वित्तमन्त्री हरियाणा ने 21,000/-रुपये दिए। श्री प्रह्लादराय गुप्त तथा अन्य साथियों से भी कमरों के लिये रुपये इकट्ठे किये गए। इस प्रकार धन एकत्रित करने का सिलसिला आरम्भ हो गया और धर्मशाला का निर्माण चलता रहा।

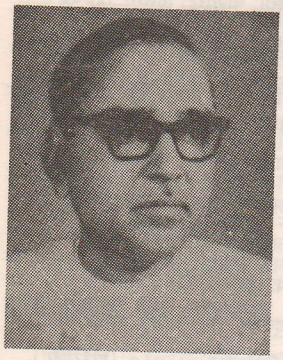

श्री कालीचरण केशान

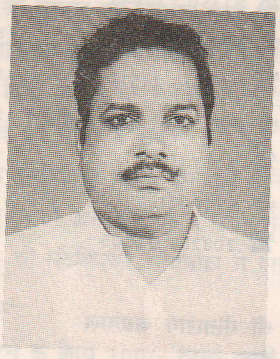

श्री राधेश्याम गुप्ता

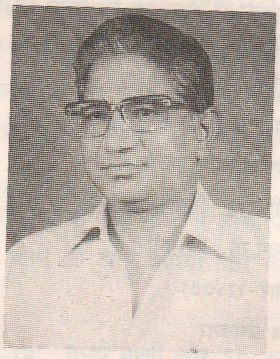

श्री प्रहलाद राय गुप्ता

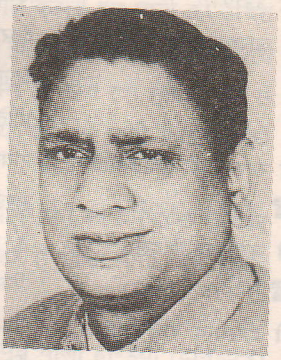

श्री मांगेराम गुप्ता

उसके बाद 28 अक्तूबर 1979 को श्री बालकृष्ण गोयनका, मद्रासवाले, ट्रस्ट के अध्यक्ष बने। उनके अध्यक्षीय काल में धर्मशाला के 22 कमरे बनकर पूर्णतया तैयार हो गए।

श्री श्रीकिशन मोदी ने जो 2,50,000/- प्रदान किये थे उनसे मन्दिर की लगभग 13 फुट ऊँची पिलंथ पर काफी काम हुआ और निर्माण-कार्य आगे बढ़ा। हरियाणा के मुख्यमंत्री चौधरी भजनलाल ने एक-एक लाख करके 5 लाख रुपये हरियाणा सरकार की ओर से सहयोग प्रदान किया।

महाराजा अग्रसेन का मन्दिर :-

1981 में स्व. श्री चाननमल बंसल निर्माण-समिति के कार्यकारी अध्यक्ष और अग्रोहा-विकास-ट्रस्ट के अध्यक्ष बने। उनके समय में महाराजा अग्रसेन के मन्दिर का गर्भ-गृह बनकर तैयार हो गया। 31 अक्तूबर 1982 को उसका उद्घाटन हरियाणा के मुख्य-मंत्री श्री भजनलाल के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

इसी बीच श्री रामेश्वरदास गुप्त ने श्री ओमप्रकाश जिन्दल से सम्पर्क किया। उनसे अग्रोहा-निर्माण के लिये आर्थिक सहयोग का अनुरोध किया। श्री जिन्दल ने अढ़ाई लाख रुपये प्रदान किए।

आगे चलकर महालक्ष्मी जी के मन्दिर का निर्माण-कार्य हाथ में लिया गया। इसके लिये पाँच लाख ग्यारह हजार रुपये, श्री फूलचंद अग्रवाल, मुम्बई वालों ने दिए।

महालक्ष्मी जी का मन्दिर :-

महालक्ष्मी जी के मन्दिर का गर्भ-गृह दो वर्ष में बनकर तैयार हो गया और शरद्-पूर्णिमा के दिन 28 अक्तूबर 1985 को हरियाणा के पूर्व वित्त-मंत्री स्व. श्री रामसरन चंद मित्तल नारनौल वालों ने महालक्ष्मी जी के मन्दिर का उद्घाटन किया। महालक्ष्मी जी की प्रतिमा के लिये 50 हजार रुपये श्री किशोरीलाल अग्रवाल, मुम्बई वालों ने दिए। प्राण-प्रतिष्ठा उन्होंने तथा उनकी पत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी ने कराई। प्राण-प्रतिष्ठा का खर्च भी उन्होंने ही वहन किया।

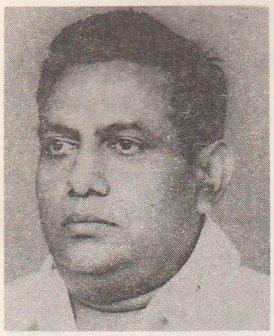

स्व. श्री चाननमल बंसल

श्री फूलचंद अग्रवाल

श्री ओमप्रकाश जिंदल

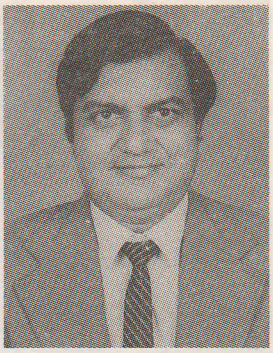

श्री वेदप्रकाश चिड़ीपाल

माँ सरस्वती के मन्दिर का निर्माण :-

माँ सरस्वती के मन्दिर का निर्माण भी पूरा हुआ। इसके लिये श्री वेदप्रकाश चिड़ीपाल, अहमदाबाद वालों ने पन्द्रह लाख रुपये प्रदान किये।

तीनों मन्दिरों के सामने विशाल सत्संग-भवन :-

तीनों मन्दिरों के सामने विशाल एवं भव्य सत्संग भवन का निर्माण भी हो चुका था। अब हाल की सीढ़ियों के दोनों तरफ बने हाथी और थोड़ा ऊपर चढ़कर दोनों ओर बनी नयनाभिराम माँ गंगा एवं माँ यमुना की प्रतिमाएँ तथा हाल की छत पर जाने के लिए दोनों तरफ बने रैम्प आदि को निहारते हुए यात्रीगण मंत्र मुग्ध हो जाते हैं।

अतिथिगृह आदि :-

अतिथिगृह के 10 कमरे, कमरों के साथ रसोईघर एवं शौचालय (संयुक्त) तथा गुसलखाने बनवाए गये। आगे चलकर 1993 में इन कमरों के ऊपर 10 कमरे और बनवाए गए।

वृक्षारोपणः-

अग्रोहा में हरियाली का नितांत अभाव था। 14 सितम्बर 1980 को अखिल भारतीय मारवाड़ी-सम्मेलन के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रामप्रसाद पोद्दार अग्रोहा पधारे। उन के सम्मान में समारोह का आयोजन किया गया। साथ ही उन के नेतृत्व में 200 वृक्षों का वृक्षारोपण-समारोह संपन्न किया गया। वे वृक्ष आज भी अग्रोहा-धाम की शोभा बने हुए हैं।

आगे चलकर भूमि को समतल कराया गया। उसमें घास के पार्क लगवाए गए, वाटिकाएँ बनाई गई, मुख्यद्वार से मन्दिर तथा धर्मशाला तक जाने के लिये सड़कों का निर्माण कराया गया, सड़कों के साथ-साथ हरी पट्टी बनाई गई। 1943 फुट लम्बी और 6 फुट ऊँची तथा डेढ़ फुट मोटी चार दीवारी बनवाई गई। इसके साथ ही शक्ति-सरोवर का निर्माण भी आरम्भ किया गया।

14 सितम्बर 1980 को स्व० श्री रामप्रसाद पोद्दार अग्रोहा-धाम में वृक्षारोपण करते हुए।
साथ में बैठे हुए हैं स्व. श्री रामकंवार गुप्ता बहादुरगढ़ वाले।

14 सितम्बर 1989 को स्व. श्री रामप्रसाद पोद्दार को नक्शे दिखाकर
अग्रोहा की योजना समझाते हुए श्री रामेश्वरदास गुप्त।

धर्मशाला की पहली मंजिल पूरी हुई :-

इसी बीच श्री नंदकिशोर गोयनका ने छः-सात लाख रुपये लगाकर धर्मशाला के पीछे का भाग, जिसमें प्रतीक्षा-कक्ष, डाईनिंग-हाल, रसोई-घर आदि सम्मिलित थे, का निर्माण करवाया। इस प्रकार धर्मशाला की पहली मंजिल का निर्माण-कार्य पूरा हो गया।

सुभाष गोयल अध्यक्ष बने :-

22 दिसम्बर 1985 को श्री सुभाष गोयल ट्रस्ट के अध्यक्ष बने। उनके अध्यक्ष बनने के बाद अग्रोहा के निर्माण का कोई कार्य पैसे के कारण रुका नहीं। वे समय-समय पर विपुल धनराशि प्रदान करते रहे। साथ ही उनके माध्यम से भी धन मिलने में पर्याप्त सुविधा रही। उन्होंने सर्वप्रथम नहर से पानी लाने और उसे शक्ति-सरोवर तक पहुँचाने का काम हाथ में लिया।

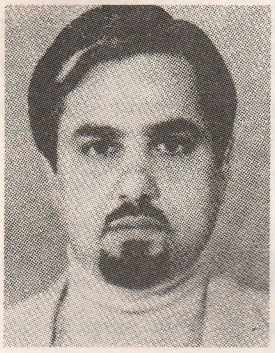

श्री सुभाषचन्द्र गोयल

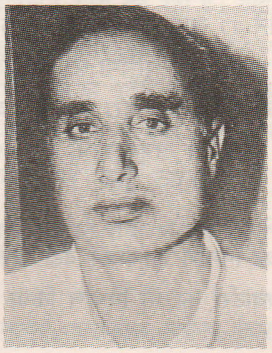

श्री नन्दकिशोर गोयनका

श्री बालेश्वर अग्रवाल

नहर से शक्ति-सरोवर तक पानी के नाले का निर्माण :-

नहर से पानी लाने के लिये लगभग 3 किलोमीटर लम्बे नाले की खुदाई कराई गई और उसे पक्का बनवाया गया। साथ ही अनेक स्थानों पर उस नाले को छतवाया भी गया। 1986 में मेले के अवसर पर उस नाले द्वारा शक्ति-सरोवर में पानी भरा गया और 18 अक्तूबर 1986 को भारत माता-मन्दिर, हरिद्वार वाले स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि जी महाराज के सान्निध्य में शक्ति-सरोवर में स्नान का शुभारम्भ किया गया।

महालक्ष्मी जी के मन्दिर की परिक्रमा में पत्थर लगने का जो काम बाकी था, उसे पूरा कराया गया। उसके लिये जो पत्थर खरीदा गया, उसका भुगतान श्री श्रीकिशन मोदी ने किया।

श्री नंदकिशोर गोयनका ने शक्ति-सरोवर के पीछे की भूमि को ट्रस्ट के लिये खरीद लिया। जो दीवार शक्ति-सरोवर के साथ बनाई गई थी, उसका निर्माण अपनी नई भूमि को अंदर लेते हुए पुनः करवाया गया। सरोवर और यात्री-निवास के बीच में जो विशाल टीला था उसको समतल कराया गया।

रामेश्वरदास गुप्त का मंत्री-पद से त्यागपत्र :-

इसी बीच श्री रामेश्वरदास गुप्त ने 22 दिसम्बर 1986 को अग्रोहा विकास-ट्रस्ट के मंत्री-पद से त्याग-पत्र देकर अपने आपको पद-मुक्त कर लिया। लेकिन अग्रोहा विकास-ट्रस्ट के कार्यों से वे निरंतर जुड़े रहते हैं। उनके बाद श्री बालेश्वर अग्रवाल ने ट्रस्ट के मंत्री-पद का भार संभाला। वे 7 दिसम्बर 1997 तक पूरी लगन के साथ कार्य करते रहे।

शक्ति-सरोवर का निर्माण :-

श्री सुभाष गोयल ने अग्रोहा-तीर्थ का नया मास्टर प्लान बनवाया। मन्दिर तथा शक्ति-सरोवर के नए नक्शे तैयार करवाए। नक्शे के अनुसार मन्दिर के नए माडल भी तैयार करवाए। शक्ति-सरोवर के नए नक्शे के अनुसार शक्ति-सरोवर का निर्माण-कार्य

आरम्भ किया गया। उस नक्शे के अनुसार शक्ति-सरोवर के चारों ओर एक तिमंजिला भवन तैयार हो चुका है। पहली मंजिल में चारों ओर बरामदें बन चुके हैं। बरामदों के ऊपर दूसरी मंजिल पर 68 कमरों का निर्माण हो चुका है। तीसरी मंजिल में भी 68 कमरों का निर्माण हो चुका है। चौथी मंजिल पर 26 नयनाभिराम छत्रियाँ बन चुकी हैं। सरोवर में पश्चिमी घाट पर समुद्र-मंथन की भव्य झाँकियों का निर्माण हो चुका है। शक्ति सरोवर का निर्माण पूरा हो जाने पर आज यह देश-भर में अपने प्रकार का यह एक ही सरोवर है। इसकी उपमा नहीं है।

धर्मशाला की दूसरी मंजिल का निर्माण :-

आगे चलकर धर्मशाला के पिछले भाग की दूसरी मंजिल तैयार करवाई गई। सामने के 22 कमरों के ऊपर दूसरी मंजिल बनाने के लिये कलकत्ते की क्षेत्रीय समिति ने बीड़ा उठाया और शरद्-पूर्णिमा के अवसर पर 25-26 अक्तूबर 1988 को अग्रोहा में आयोजित मेले में कलकत्ते के भाइयों ने घोषणा की कि 22 कमरों के ऊपर दूसरी मंजिल का निर्माण कलकत्ते की ओर से कराया जाएगा। इसके लिए उनहोंने 11 लाख रुपये एकत्रित करके निर्माणार्थ भेज दिए हैं। 22 कमरों के ऊपर की मंजिल का निर्माण भी पूरा हो गया। 1991 की शरद्-पूर्णिमा पर आयोजित मेले में उन कमरों का उद्घाटन हुआ। इस प्रकार आरम्भ में किया गया दुमंजिली धर्मशाला का संकल्प पूरा हो गया। कलकत्ता क्षेत्रीय समिति ने महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा पर स्वर्णिम छत्र चढ़ाने के लिये एक लाख का अनुदान भी सन् 1993 में उपलब्ध कराया।

डाक-घर का निर्माण :-

अग्रोहा-धाम में डाकघर के लिये स्थान का निर्माण करवाकर वहाँ डाकघर चालू करवाया गया। अब अग्रोहा-धाम का अपना डाकघर है। मजदूरों के लिये अनेक क्वार्टरों का भी निर्माण किया गया है।

वाटर-वर्क्स का निर्माण :-

अग्रोहा-धाम में अपने स्वतंत्र वाटरवर्क्स का निर्माण करवाया गया। पानी को एकत्रित करके, उसे साफ करने और लिफ्ट करके टंकियों में भेजने की व्यवस्था करवाई गई। अब इन टंकियों द्वारा ही सारे परिसर में पानी सप्लाई होता है।

रसोईघर आदि का निर्माण :-

धर्मशाला के सामने पुराने जो तीन कमरे बने हुए थे, उन्हें रसोई घर के रूप में परिणत किया गया, उनके साथ बड़े-बड़े दो डाइनिंग-हालों का निर्माण भी हो चुका है। इससे वहाँ बैठकर भोजन करने की पर्याप्त सुविधा हो गई है।

अग्रोहा-धाम परिसर में अब पृष्ठ 39 पर दिए चित्र के अनुसार अति आधुनिक और भव्य किचन और डाइनिंग हाल का निर्माण भी पूरा हो चुका है।

विद्युत-व्यवस्था :-

सम्पूर्ण परिसर में प्रकाश एवं अन्य उपयोगों के लिये विद्युत-व्यवस्था की गई है, जिससे विद्युत की अनिश्चतता समाप्त हो गई है और सभी कार्य सुचारु रूप से चलने लगे हैं। इस हेतु मुम्बई के श्री शिवचरण गुप्ता ने सवा पाँच लाख रुपये वाला एक बड़ा जनरेटर ट्रस्ट को प्रदान किया।

प्याऊ एवं कैंटीन :-

अग्रोहा-धाम के मुख्य द्वार के अन्दर बाईं ओर एक भव्य प्याऊ तथा दाईं ओर कैंटीन का निर्माण भी पूरा हो गया है। कैंटीन से यात्रियों को पर्याप्त सुविधा हो गई है। इस समय चार प्याऊओं में वाटर कूलर की मशीनें लगवाकर ठंडे पानी की समुचित व्यवस्था कर दी गई है।

हनुमान जी की दर्शनीय प्रतिमा :-

अग्रोहा-धाम में पश्चिमी किनारे पर हुनमान जी की 90 फुट ऊँची भव्य दर्शनीय प्रतिमा का निर्माण चल रहा है। आशा है इसका निर्माण जल्दी ही पूरा हो जायेगा।

हनुमान जी के मन्दिर का निर्माण :-

अग्रोहा-धाम के पश्चिमी किनारे पर हनुमान जी के मन्दिर का निर्माण सात-रोड, हिसार के निवासी श्री चेतराम अग्रवाल जो आजकल मल्कागंज, दिल्ली में रहते हैं ने करवाया। इस मन्दिर में हनुमान जी की प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा भी हनुमान-जयन्ती के अवसर पर 5-6 अप्रैल 1993 को उन्हीं के द्वारा कराई गई।

बालक्रीड़ा-केन्द्र :-

शक्ति-सरोवर के साथ बच्चों के मनोरंजन के लिये बालक्रीडा-केन्द्र (अप्पू घर) का निर्माण किया गया है। इसमें बहुत से झूलों, हिंडोलों के अतिरिक्त मनोरंजन के अति आधुनिक साधन जुटाए गए हैं।

आप भी एक बार अग्रोहा-धाम पहुंचें :-

इस प्रकार अग्रोहा-धाम का निर्माण दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ रहा है। वहाँ क्या था और क्या बन गया, इसकी जानकारी के लिये आप एक-दूसरे से पूछने की अपेक्षा, एक बार अग्रोहा-धाम पहुँचकर स्वयं अपनी आँखों से देखें तो आपको ठीक-ठीक यथा-स्थिति की जानकारी हो जायेगी। फिर आप किसी से पूछेंगे नहीं कि अग्रोहा-धाम में क्या निर्माण हुआ है, बल्कि आप स्वयं दूसरों को बताते हुए नहीं अघाएंगे कि अग्रोहा-धाम में क्या कुछ निर्माण हो चुका, कितना विकास हो गया है।

यात्रियों के लिये आवास तथा भोजन की व्यवस्था :-

अग्रोहा धाम में आने वाले यात्रियों के लिये आवास तथा भोजन की निःशुल्क व्यवस्था निरन्तर चल रही है।

क्षेत्रीय-समितियों का गठन :-

श्री सुभाष गोयल की योजना के अनुसार मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद आदि नगरों में अग्रोहा विकास-ट्रस्ट की क्षेत्रीय समितियों का गठन किया गया है। मुम्बई की क्षेत्रीय समिति अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उसके पदाधिकारियों और सदस्यों ने पर्याप्त धन एकत्रित करके अग्रोहा-धाम के निर्माण में सहयोग प्रदान किया और कर रहे हैं। इसके साथ ही अग्रोहा के प्रचार-प्रसार में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

अग्रोहाधाम-यात्रा स्पेशल ट्रेन :-

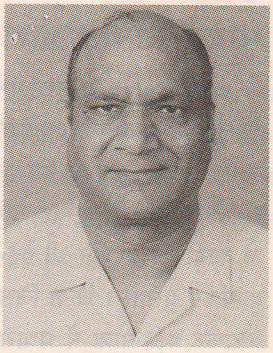

श्री सत्यप्रकाश आर्य

14-15 अगस्त 1988 को श्री सत्यप्रकाश आर्य के नेतृत्व एवं श्री स्वरूप चंद के संयोजन में मुम्बई से लगभग 120 यात्री तथा आगरा से 20 यात्री अग्रोहा की यात्रा के लिये पधारे। अग्रोहा के निर्माण और विकास को जब उन लोगों ने अपनी आँखों से देखा तो वे बहुत अधिक प्रभावित हुए। 8 अगस्त 1989 को अग्रोहा के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना घटी। वह यह कि मुम्बई तथा महाराष्ट्र के सभी जिलों के 1200 अग्रवाल स्त्री-पुरुषों तथा बच्चों ने एक विशेष रेलगाड़ी द्वारा 6 अगस्त 1989 को मुम्बई से अग्रोहा के लिये प्रस्थान किया। यह विशेष रेलगाड़ी 8 अगस्त 1989 को प्रातः हिसार पहुँची। स्टेशन पर उपस्थित जन-समुदाय ने गर्म-जोशी के साथ यात्रियों का स्वागत किया। 1200 यात्रियों ने पूरे दिन अग्रोहा का निरीक्षण एवं भ्रमण किया तथा शक्ति-सरोवर में स्नान किया। तत्पश्चात् महालक्ष्मी जी तथा महाराजा अग्रसेन के मन्दिरों में पूजा की। 9 अगस्त 1989 को वे यात्री उसी विशेष रेलगाड़ी से मुम्बई लौट गए।

श्री स्वरूप चंद गोयल

12 नवम्बर 1991 को 900 से अधिक यात्रियों को लेकर अग्रोहाधाम-यात्रा स्पेशल ट्रेन से मुम्बई से प्रस्थान किया। 14 नवम्बर को प्रातः 3 बजे स्पेशन ट्रेन हिसार पहुंची। हिसार स्टेशन पर यात्रियों का भव्य स्वागत किया गया और बसों द्वारा यात्रियों को अग्रोहा ले जाया गया। महिलाओं ने महालक्ष्मी के मन्दिर में विभिन्न प्रकार की पूजाओं और आरतियों का आयोजन किया तथा रंगोलियाँ सजाई। रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये। इस प्रकार महिलाओं ने अग्रोहा-धाम की पावन भूमि में समाँ बांध दिया।

अब 1999 में तो आए दिन दूर-दराज से यात्री-गण अग्रोहा-दर्शन के लिए पहुँचते ही हैं साथ ही सैंकड़ों आदमी प्रतिदिन अग्रोहा की पावन धरती को नमन करने और अपनी मनोकामनाएँ पूरी करने के लिए निरन्तर पहुँच रहे हैं। प्रति रविवार को तो इनकी संख्या सैंकड़ों से बढ़कर हजार से भी ऊपर हो जाती है।

रामप्रसाद पोद्दार राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना :-

श्री रामप्रसाद पोद्दार का जन्म राजगढ़ (राज०) में 1914 में हुआ था। 1935 में आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करके आप बिड़ला प्रतिष्ठान जियाजी राव कॉटन मिल्स, ग्वालियर में सेवारत हुए। 1943 में आप बिड़ला कॉटन मिल्स दिल्ली के महाप्रबन्धक बन गए। 1953 में आप दिल्ली फैक्टरी आनर्स फैडरेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1954 में आप सैंचुरी टैक्सटाइल्स एण्ड इण्डस्ट्री लि० मुम्बई के वरिष्ठ कार्यपालक बने। श्री रामप्रसाद पोद्दार ने 'नवीन कल्याण क्षेत्रीय सेना' के संगठन में उल्लेखनीय योग प्रदान किया, जिसके लिये महामहिम राष्ट्रपति द्वारा उन्हें मानद ''मेजर'' की पदवी से अलंकृत किया गया।

समाज के उत्थान एवं विकास में आप सदैव तत्पर रहे हैं। मारवाड़ी-सम्मेलन एवं अग्रवाल जातीय कोष के आप अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे। आप अग्रोहा विकास ट्रस्ट के ट्रस्टी थे तथा अग्रोहा के निर्माण कार्यों में आपकी गहरी रूचि थी।

श्री रामप्रसाद पोद्दार बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कुशल प्रशासक, प्रबंन्ध एवं समाज-सेवी होने के साथ-साथ आप चिन्तक एवं लेखक भी थे। आपने प्रबन्धन विषयों पर 5 पुस्तकें लिखी। रामकाव्य एवं श्रीमद्भागवत जैसे आध्यात्मिक विषयों पर भी पुस्तकें लिखकर आपने अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। मेजर रामप्रसाद पोद्दार जैसे बहुमुखी प्रतिभा के ध नी व्यक्तित्व से आगे आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा मिलती रहे, इसके लिये अग्रोहा विकास ट्रस्ट ने उनकी पावन स्मृति में प्रतिवर्ष एक लाख रुपये का 'श्रीरामप्रसाद पोद्दार राष्ट्रीय पुरस्कार' ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति को प्रदान करने का निश्चय किया है, जिसका समाज-सेवा, व्यवसाय, उद्योग, साहित्य और अग्रोहा के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान रहा हो।

इस पुरस्कार श्रृंखला में पहला पुरस्कार जबलपुर की डा० स्वराज्यमणि अग्रवाल को, दूसरा पुरस्कार मुम्बई के श्री शीतल कुमार अग्रवाल को, तीसरा पुरस्कार चेन्नई के श्री बालकृष्ण गोयनका को प्रदान किया गया।

मुम्बई-समिति द्वारा प्रचार कार्य :-

अग्रोहा-विकास-ट्रस्ट मुम्बई-समिति द्वारा प्रचार-प्रसार की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया है। प्रतिवर्ष प्रतिभा-दर्शन के नाम से एक बड़ा आयोजन हो रहा है। उसकी उत्तम एवं आकर्षक स्मारिकाएँ-झंकार, दर्पण, झलक, प्रतिभादर्शन आदि नामों से प्रकाशित की गई हैं। उसके अलावा चित्रकथा, चित्र, स्टीकर और बैज के साथ ही साथ संगीतमय ओडियो कैसिट भी तैयार की हैं। मुम्बई समिति ने वीडियो कैसिट भी बनाई है जिसमें अग्रोहा की जानकारी के साथ-साथ मुम्बई-समिति के कार्यों का प्रदर्शन भी है। प्रचार की दृष्टि से जी.टी.वी. ने विशेष योगदान के रूप में 16 अक्टूबर 1994 को एक विशेष कार्यक्रम प्रसारित किया जिसमें अग्रोहा की वर्तमान स्थिति की पूर्ण जानकारी दी गई है। इस वृत्त चित्र.की भी कैसिट तैयार कराकर बड़ी मात्रा में प्रचारार्थ वितरण की योजना बनाई गई है। इसके बाद भी जी.टी.वी. द्वारा समय-समय पर अग्रोहा धाम से सम्बंधित कार्यक्रम प्रसारित कर प्रचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

महिलाओं, पुरुषों एवं युवाओं की केन्द्रीय समिति एवं उपसमितियों के द्वारा संगठन का एक जाल सा बिछाकर मुम्बई की समिति ने एक आदर्श स्थापित किया है।

अग्रोहा-धाम-पत्रिका तथा साहित्य आदि का प्रकाशन :-

1987 में अग्रोहा धाम नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया गया। इसके प्रचार-प्रसार में श्री नंदकिशोर गोयनका तन, मन, धन से लगे हुए हैं। इस पत्रिका के माध्यम से अग्रोहा के निर्माण, विकास और उसकी मान्यताओं के प्रचार-प्रसार को पर्याप्त बल मिला है। महाराजा अग्रसेन के चित्रों तथा अग्रवाल-समाज से सम्बन्धित पुस्तकों जैसे-अग्रोहा एक ऐतिहासिक धरोहर, वीरता की विरासत, अग्रोहा-धाम कविताओं में, महाराजा अग्रसेन गाथा (चित्रकथा), एक ईंट एक रुपया, महाराजा अग्रसेन चालीसा, झंकार, प्रतिभादर्शन आदि है। (समुचित सूची देखिए पृष्ठ 63 पर)

अग्रोहा-धाम ज्योति रथयात्रा का आरम्भ

चैत्र की पूर्णिमा 15 अप्रैल 1995 को अग्रोहा विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुभाष चन्द्र गोयल ने देव-पूजन कर अग्रोहा से महाराजा अग्रसेन ज्योति रथयात्रा का शुभारम्भ किया। यह अग्रोहा-धाम ज्योति रथयात्रा राजस्थान, गुजरात, हरियाणा म.प्र.; महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, बंगाल आदि-आदि प्रदेशों का भ्रमण कर चुकी है। जिस-जिस स्थान पर रथ यात्रा पहुंची वहां शोभा-यात्रा निकाली गई। इससे अग्रोहा धाम के प्रति लोगों में जागृति आई है। धन भी एकत्रित हुआ है।

महाराजा अग्रसेन हाऊस बिल्डिंग को-आपरेटिव सोसायटी की स्थापना :-

स्व० श्री चाननमल बंसल के अध्यक्षीय काल 1983 में महाराजा अग्रसेन को-आपरेटिव हाऊसिंग सोसायटी की स्थापना की गई। इस सोसायटी ने कालोनी बनाने के लिये 27 एकड़ जमीन किसानों से खरीदी। उस हाऊसिंग सोसायटी के प्रायः सभी प्लाट उसी समय बिक गये थे। 12 अप्रैल 1983 को इसकी बैठक हुई थी। उसके बाद कुछ अपरिहार्य कारणों से लगभग नौ वर्षो तक इसकी कोई बैठक नहीं हो पाई। फिर 24 जनवरी 1993 को अग्रोहा-धाम में इसकी बैठक हुई। इस बैठक में सोसायटी का पुर्नगठन किया गया। आजकल इस सोसायटी के अध्यक्ष श्री नंद किशोर गोयनका हैं।

अग्रोहा की गौशाला :-

अग्रोहा में श्री अग्रसेन वैष्णव गौशाला पिछले कई वर्षों चल रही है। भिवानी के सेठ भोलाराम डालमिया एवं ला० साँवलराम के प्रयत्नों से 1915 में इस गौशाला की स्थापना हुई थी। इसका आधुनिक साज-सज्जाओं पर आधारित नया भवन बन चुका है। यह गौशाला अग्रोहा के दर्शनीय स्थानों में से एक है। इस गौशाला का उद्देश्य बेसहारा बूढ़ी, लंगड़ी-लूली गायों का पालन करना है। इसमें कई सौं गउएँ हैं।

अग्रोहा में विद्यालय आदि का निर्माण :-

हरियाणा सरकार की ओर से लड़कों का विद्यालय तो चल ही रहा था। इसके बाद वहाँ लड़कियों का विद्यालय तथा एक अस्पताल और डिस्पेंसरी भी चालू हो चुकी है।

शीलामाता का मन्दिर

अग्रोहा-धाम से केवल एक किलोमीटर दूर थेह से दूसरी ओर अग्रोहा-निर्माण के प्रथम संयोजक स्व. श्री तिलकराज अग्रवाल मुम्बई वालों ने अपनी संस्था 'अग्रोहा विकास संस्थान' के माध्यम से शीलामाता के मन्दिर का निर्माण आरम्भ करवाया था। उनके स्वर्गवास के बाद उनके बेटे श्री शीतल कुमार अग्रवाल और परिवार वालों ने उस भव्य, विशाल, सुन्दर दर्शनीय और पूजनीय मन्दिर के निर्माण को पूरा करवाया।

महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज एवं अस्पताल अग्रोहा

श्री बनारसीदास गुप्त ने हरियाणा के उपमुख्य मंत्री बनने के बाद हरियाणा सरकार द्वारा 'अग्रोहा डवलेमैंट बोर्ड' की स्थापना करवाई। इसके बाद मैचिंग ग्रॉट के आधार पर अग्रोहा में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज, अस्पताल एवं रिसर्च इन्स्टीच्यूट की योजना बनवाई। समझौते के अनुसार आधा रुपया हरियाणा सरकार दे रही थी तथा आधा रुपया अग्रवाल-समाज एकत्रित करके लगा रहा था। हरियाणा सरकार ने 267 एकड़ भूमि अधिग्रहण करके संस्था को दे दी थी। साथ ही समझौते के अनुसार हरियाणा सरकार आवर्तक व्यय का 99 प्रतिशत वहन करेगी और एक प्रतिशत संस्था वहन करेगी।

21 मई 1989 को हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री चौ० देवीलाल ने मेडिकल कालेज, अस्पताल एवं रिसर्च इन्स्टीच्यूट का शिलान्यास किया। 16 जुलाई 1990 को भूमि-पूजन हुआ। उसके बाद निर्माण चालू हो गया। इसके एक विंग का उद्घाटन 7 अगस्त 1994 को हरियाणा के तत्कालीन मुख्य-मंत्री चौ० भजनलाल ने किया। 1994 में कालेज चालू हो गया और पढ़ाई आरम्भ हो गई।

आरम्भ में महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज, अस्पताल एवं रिसर्च इन्स्टीच्यूट के निर्माण में उसके अध्यक्ष पद्मश्री घनश्यामदास गोयल, उपाध्यक्ष स्व. श्री रामकंवार गुप्ता, मंत्री श्री नंदकिशोर गर्ग एवं कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जिन्दल ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

11 जुलाई 1995 को चण्डीगढ़ में हरियाणा सरकार के कार्यालय में सरकार के और कालेज के प्रतिनिधियों की एक बैठक हुई उसके बाद हरियाणा सरकार ने अनुदान देना बंद कर दिया। 1997 के अंत में महाराजा अग्रसेन मेडीकल कालेज

के पदाधिकारी बदल गए और निम्नलिखित पदाधिकारियों ने कार्यभार संभाला। अध्यक्ष–श्री ओ. पी. जिंदल, हिसार; वरिष्ठ उपाध्यक्ष–श्री जय कुमार जैन, मुम्बई; महामंत्री–श्री नंद किशोर गर्ग, दिल्ली; संयुक्त महामंत्री–श्री आर. सी. छारिया, दिल्ली; कोषाध्यक्ष- श्री रोशन लाल अग्रवाल, दिल्ली; परामर्शदाता–श्री एस. आर. जिंदल, बेंगलौर; श्री टी. डी. सूगला; श्री बी. डी. अग्रवाल; नई प्रबन्ध समिति ने अनुदान के लिए भरपूर प्रयास किया परन्तु अभी तक भी हरियाणा सरकार ने अनुदान देना आरम्भ नहीं किया।

प्रबन्ध समिति ने सरकारी अनुदान के मामले को न्यायालय में सशक्त तरीके से रखा। सत्र न्यायालय ने अपना निर्णय समिति के पक्ष में दिया। इसके बाद हरियाणा सरकार ने इस निर्णय के विरूद्ध पंजाब-हरियाणा उच्च न्यायालय में अपील दर्ज कर दी।

श्री ओ. पी. जिंदल

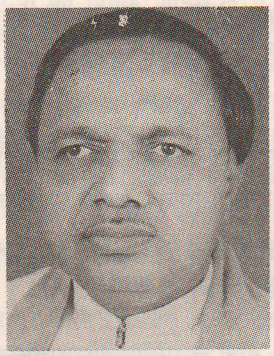

श्री नंद किशोर गर्ग

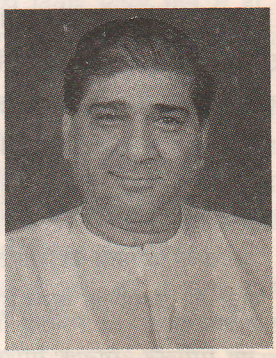

श्री रोशन लाल अग्रवाल

अग्रबन्धुओं के सक्रिय सहयोग एवं जिंदल परिवार विशेषकर श्री सीताराम जिंदल, श्री ओ. पी. जिंदल व अन्य पदाधिकारियों के सतत् प्रयासों से पिछले डेढ़ वर्ष में लगभग 16 करोड़ रूपये इस परियोजना पर लग चुके हैं।

अग्रवाल

'अग्रवाल' शब्द का जहां तक संबंध है, यह दो शब्दों से मिल कर बना है अग्र+वाल=अग्रवाल। महाराजा अग्रसेन का नाम अग्र था। अग्रोहा का नाम भी आग्रेयगण था। अग्रोहा ध्वस्त होने के बाद अग्रोहा के निवासी अपने नगर से पलायन कर गए। ये देश के सभी क्षेत्रों में फैल गए और जहाँ-जहाँ बसे 'अग्रोहा वाले' होने के कारण और महाराजा अग्रसेन की संतान कहलाने के कारण अपने आपको अग्रवाल कहने लगे।

अग्रोहा से निकलकर यहाँ के निवासी जहाँ भी गए, महाराजा अग्रसेन की समतावादी विचारधारा को अपने साथ लेते गए। उन्होंने उस समाजवादी विचारधारा को निरन्तर अपने हृदय में संजोए रखा। न केवल संजोए रखा अपितु उसे अपने जीवन में ढालकर, उसे कार्य रूप में परिणत करते हुए, अपनी हजारों वर्षो की परम्पराओं को अक्षुण तो रखा ही, साथ ही उसे निभाते रहे और आज भी निभा रहे हैं। यही कारण है कि अग्रवाल-समाज के लोग तन, मन और धन से समाजवादी प्रकृति के हैं।

अग्रवाल-समाज के प्रत्येक सदस्य में महाराजा अग्रसेन का समाजवाद उसकी रग-रग में प्रवाहित हो रहा है। यही कारण है कि हर अग्रवाल अपने आप में उदार रहा हैं वह सदा निष्ठावान और कर्मठ व्यक्ति के रूप में अपनी भूमिका निभाता रहा है। ''सादा जीवन और उच्च विचार'' वाली कहावत हमेशा उस पर चरितार्थ रही है। जो कुछ भी उसके पास बचता रहा है, उसे वह उदारतापूर्वक परहित के लिये अर्पित करता रहा है।

अग्रवाल-समाज जीवन के हर क्षेत्र में सेवा कार्य कर रहा है। वह चपरासी है, कलर्क है, अधिकारी है, वकील है, मैजिस्ट्रेट है, जज है, मुनीम है, दुकानदार है, कारखाने का मजदूर है, उद्योगपति है, विधायक है, मंत्री है, इंजीनियर है, वैज्ञानिक है, हल चलाता है और धान भी कूटता है। जिस समय वह थोड़ा सा भी सम्पन्न हो जाता है वह ट्रस्टी की भूमिका निभाता है। अपने ऊपर यह नाम-मात्र का खर्च करता है। सारे धन का, सारी सम्पत्ति का समाज के लिये रक्षण करता है और समाज के लिये व्यय करता है। यही कारण है कि देश में जहाँ भी आप जाएँगे, वहाँ आपको अग्रवालों द्वारा निर्मित, संस्थापित अथवा संचालित चिकित्सालय, औषधालय, स्कूल, कालेज, पुस्तकालय, धर्मशालाएँ, मन्दिर कुएँ, बावडियाँ, तालाब, प्याऊ आदि जनहित की संस्थाएँ मिलेगी। यह सब महाराजा अग्रसेन के समाजवाद की ही देन है।

अग्रवालों के गोत्र

गोत्रों पर विचार करने से पूर्व हमें इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि गोत्र किसे कहते हैं? आमतौर पर गोत्र एक परिवार को, एक खानदान को एक कुटुम्ब को, एक कुनबे को कहते हैं।

एक परिवार के, खानदान के, एक कुटुम्ब के, एक कुनबे के अथवा एक गाँव के लड़के-लड़कियों के विवाह आपस में नहीं होते थे। एक गोत्र के लड़के-लड़कियाँ आपस में विवाह न करके, दूसरे गोत्र में, दूसरे परिवार में विवाह करते थे।

अब हम गोत्र के साथ-साथ जाति और समाज के विषय में थोड़ा विचार कर लें। जहाँ लोग अपने गोत्र में विवाह नहीं करते हैं, अपने से इतर गोत्र में विवाह करते हैं, वहाँ अपनी जाति अथवा अपने समाज में विवाह करते हैं। दूसरी जाति अथवा दूसरे समाज में विवाह करना पसंद नहीं करते।

उदाहरण के लिये अग्रवाल, अग्रवाल से इतर जाति अथवा समाज में विवाह करना पसंद नहीं करते। साथ ही अपने गोत्रों में जैसे-बंसल-बंसल से, गोयल-गोयल से, गर्ग-गर्ग से विवाह करना पसंद नहीं करते।

अग्रवालों के गोत्रों का जहाँ तक सम्बन्ध है, हमारे गोत्रों की संख्या 18 है। अखिल भारतीय अग्रवाल-सम्मेलन ने निम्नलिखित 18 गोत्रों को प्रामाणिक करते हुए मान्यता प्रदान की है।

यह सम्मेलन अग्रवाल-समाज में प्रचलित 18 गोत्रों के प्राचीन और प्रचलित रूपों की सूची को मान्यता देता है तथा उनकी वर्तनी (स्पेलिंग) भी हिन्दी और अंग्रेजी में निश्चित करता है। यह सम्मेलन अग्रवाल मात्र से अनुरोध करता है कि वे गोत्रों के इन्हीं रूपों का लिखने और बोलने में प्रयोग करें। इसी प्रकार (AGARWAL) शब्द को ही मान्यता दी जाती है।

गर्ग	Garg	गोयल	Goyal
गोयन	Goyan, Gangal	बंसल	Bansal
कंसल	Kansal	सिंहल	Singhal
मंगल	Mangal	जिंदल	Jindal
तिंगल	Tingal	ऐरण	Airan
धारण	Dharan	मधुकल	Madhukal
बिन्दल	Bindal	मित्तल	Mittal
तायल	Tayal	भन्दल	Bhandal
नागल	Nagal	कुच्छल	Kuchhal

टिप्पणीः–1. हमारे यहाँ गंगल बन्धु भी हैं। यह शब्द गोयन गोत्र का ही दूसरा रूप है, सम्मेलन इसे भी मान्यता देता है।

2. इसी प्रकार अग्रवाल शब्द को भी हिन्दी और अंग्रेजी में विभिन्न रूपों में लिखा जाता है-सम्मेलन ने अग्रवाल (Agarwal) रूप को ही अपनी मान्यता प्रदान की है।

अग्रवालों के 18 गोत्रों के स्थान पर ये साढ़े सत्रह कहलाते हैं। कहते हैं कि महाराजा अग्रसेन ने जो यज्ञ किये थे, उनमें से 17 यज्ञ तो सम्पन्न हो गये थे, परन्तु 18वें यज्ञ को बीच में ही रोक दिया गया था। यह यज्ञ पूरा नहीं हो सका, इसलिये उसे आधा ही कहा गया, माना गया।

महाराजा अग्रसेन के गणराज्य में 18 गण (राज्य) थे। एक-एक गण का अध्यक्ष एक-एक यज्ञ का यजमान बना था। प्रत्येक यज्ञ का एक-एक ऋषि अधिष्ठाता था। जिस यज्ञ का जो ऋषि अधिष्ठाता था, उस ऋषि का नाम उस यज्ञ के यजमान को गोत्र के रूप में दे दिया गया। उदाहरण के लिये जिस यज्ञ के अधिष्ठाता गर्ग मुनि थे, उस यज्ञ के यजमान का गोत्र गर्ग निर्धारित कर दिया गया।

कुछ लोगों का कहना है कि महाराजा अग्रसेन के 18 पुत्र थे और उन्हीं के नाम पर प्रचलित ये 18 गोत्र हैं। ऐसा मानना किसी भी हालत में उचित नहीं है क्योंकि इस्लाम मत से पूर्व भारत की संस्कृति में चाचा-ताऊ अथवा बहिन-भाई के बेटे-बेटियों का आपस में विवाह नहीं होता था।

अग्रवाल-समाज में गोत्रों का परिपालन ही उनकी एक बहुत बड़ी विशेषता रही है। विवाह के अवसर पर गोत्र-उच्चारण के समय पिता अपने पुत्र को अपना गोत्र सौंपता चला आ रहा है। इस व्यवस्था का पाँच हजार वर्ष से भी अधिक समय से निरन्तर निर्वाह हो रहा है और सगोत्र विवाह से बचते रहे हैं। परन्तु अब अन्य किसी की बात छोड़िये, अग्रवाल-समाज के बेटे-बेटी भी सगोत्र ही क्यों, ताऊ-चाचा, भाई-बहिन भी आपस में विवाह कर लेते हैं। भले ही ऐसे विवाह एक दो ही क्यों न हों परन्तु उनके उदाहरण को स्वीकार करते हुए भविष्य में यदि कुछ भाई-बहिन आपस में विवाह करेंगे तो उन्हें कौन रोक सकेगा ?

चाचा-ताऊ अथवा भाई-बहन के बेटे-बेटियों का विवाह आपस में न हो जाए, साथ ही विवाह विषम गोत्र से ही हो, जितना भी संभव हो सके, दूर से ही हो, इसके लिये कोई तो सीमा निर्धारित करनी ही होगी। उदाहरण के लिये फिजी देश में भारतीयों की संख्या पर्याप्त है। उसे छोटा भारत भी कहा जाता है। वहाँ भारतवासियों के सामने जब विवाह और गोत्र की समस्या आई तो उन्होंने अपने गोत्रों की रचना 'जहाज' (समुद्री जहाज) के नाम पर तय की। भारत से जिस जहाज में जो लोग वहाँ पहुँचे थे, उस जहाज के नाम को ही उन्होंने अपना गोत्र बना लिया। जितने लोग एक जहाज से गये थे, उन्होंने उस जहाज के परिवारों में आपस में विवाह न करके, दूसरे जहाज से पहुँचने वाले परिवारों में विवाह, शादी करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार उन्होंने अपने गोत्रों की नए सिरे से रचना कर ली। इस प्रकार एक कुनबे, एक परिवार, एक खानदान, एक समुदाय के लोग आपस में विवाह न करके दूसरे कुनबे, दूसरे परिवार, दूसरे कुटुम्ब में विवाह करते हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण का जहाँ तक संबंध है विवाह विषम के साथ होना ही चाहिए, सम से नहीं। दूर से होना चाहिए, निकट से नहीं। इसलिये कहा गया है-"दुहिता दूरे हिता" अर्थात् कन्या का विवाह दूर होना हितकर है। उसका विवाह सम आयु से नहीं, सम शिक्षा से नहीं, सम रंग से नहीं, सम कद से नहीं, सम भार से नहीं, सम परिवार से नहीं, सम खानदान से नहीं, सम कुटुम्ब से नहीं, सम गाँव से नहीं, सम गोत्र से नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से स्त्री-पुरुष अमर्यादित और निर्लज्ज हो जाते हैं। उनकी संतानें भी दुर्बल, डरपोक, आलसी और दम्भी हो जाती हैं। इसलिये हमें विवाह करते समय अपने गोत्रों की मर्यादा का विशेष रूप से ध्यान रखना और पालन करना चाहिए।

अग्रवाल पत्र-पत्रिकाएँ

अग्रवाल पत्र-पत्रिकाओं का जहाँ तक संबंध है, उनकी दशा बहुत ही शोचनीय है। उसे दशा न कहकर दुर्दशा कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। पिछले पच्चीस वर्षो में अग्रवाल-समाज के कार्यकर्त्ताओं ने तीस से भी अधिक अग्रवाल-समाज से संबंधित पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ किया, परन्तु इसे दुर्भाग्य ही कहिए कि कोई दो कदम चली और कोई दस कदम ही चल पाई। लड़खड़ा कर गिरी और बंद हो गई।

दुनिया की कोई भी पत्रिका उस समय तक नहीं चल सकती, जब तक उसे पर्याप्त विज्ञापन नहीं मिलें और साथ ही उनके पर्याप्त संख्या में ग्राहक नहीं बनें। अग्रवाल पत्र-पत्रिकाओं को न तो विज्ञापन मिले और न ही लोग उनके ग्राहक ही बने, जिसके कारण उन्हें एक दिन बंद होना ही पड़ा। कुछ पत्रिकाएँ हैं जो घिसट-घिसट कर नियमित नहीं तो वर्ष में 4-6-8 अंक ही निकाल पाती हैं। ऐसी दशा में अग्रवाल भाई-बहिनों को चाहिए कि वे अपनी अग्रवाल पत्र-पत्रिकाओं को गले से लगाएँ, उनके ग्राहक बनें और उनमें यथासामर्थ्य अपने विज्ञापन भी प्रकाशित कराएँ साथ ही आर्थिक सहयोग भी प्रदान करें।

पत्रिका का नाम	सम्पादक का नाम एवं पता
❋ मंगल-मिलन (मासिक)	श्री रामवतार गुप्त, डी-36, साउथ एक्सटैंशन भाग एक, नई दिल्ली-110049
❋ युवा अग्रवाल (पाक्षिक)	श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, 8233 नई अनाज मंडी, बाड़ा हिन्दुराव, दिल्ली-6
❋ मेरी दिल्ली	श्री राजेश गुप्ता, 1494, रानी बाग, नई दिल्ली-34
❋ भारत ग्राम समाचार	श्री मदन 'विरक्त', 11-बी, गली नं.-1, पूर्वी अंगद नगर, दिल्ली-110092
❋ अग्रोहा-धाम (मासिक)	श्री शिवकुमार गोयल, अग्रोहा-धाम, (हरियाणा) अग्रोहा-125047 तथा 10-बी, लारेंस रोड, दिल्ली-110035
❋ अग्रोहा जन्मभूमि (साप्ताहिक)	श्री राधाकिशन महाजन, पुरानी अनाज मण्डी, हिसार (हरियाणा)
❋ अग्रवाल संदेश (मासिक)	श्री ज्वालाप्रसाद ''अनिल'', सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़, (उत्तर प्रदेश)
❋ अग्रोही (मासिक)	श्री महेश दर्पण, 46/123, बादशाही नाका, कानपुर-208001 (उत्तर प्रदेश)
❋ कल हमारा है (मासिक)	श्री सत्यवीर अग्रवाल, 203/43, सदर बाजार, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)
❋ अग्रगामी (मासिक)	श्री अग्रवाल समाज-समिति, अग्रसेन कटला, आगरा रोड, जयपुर (राज0)
❋ अग्रजीवन (मासिक)	श्री रामलाल अग्रवाल, 560-गोपालजी का रास्ता, जैन मंदिर के सामने, जयपुर
❋ अग्रोदक (मासिक)	श्री गिरिराज प्रसाद मित्तल, 38/46, किरण पथ सर्किल, मानसरोवर, जयपुर
❋ अग्रसेन पुष्पांजलि (मासिक)	श्री नरेन्द्र अग्रवाल, 476, कालोनी नगर, इन्दौर-5 (मध्य प्रदेश)
❋ संगठन युग (मासिक)	छत्तीसगढ़ी अग्रवाल समाज केन्द्र, अग्रवाल भवन, पुरानी बस्ती, रायपुर (मध्य प्रदेश)
❋ अग्रसेन पत्रिका	श्री सुरेश बिंदल, 3सी, आर.पी. लाइन्स, इन्दौर-452001 (मध्य प्रदेश)
❋ अग्रवाल टूडे	श्री सौरभ गोयल, स्टेशन रोड, नीमच-4588441 (मध्य प्रदेश)
❋ अग्रवाल स्नातक (मासिक)	श्री ग्यारसीलाल अग्रवाल, 21-6-490, गाँधी बाजार, हैदराबाद-208001
❋ अग्र केसरी (मासिक)	श्री घनश्याम अग्रवाल, 55-गौशाला वार्ड, गोंदिया-411601 (महाराष्ट्र)
❋ अग्रचिंतन	श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जगत अपार्टमैंट, रवि नगर, अमरावती रोड, नागपुर-440010
❋ श्री अग्रसेन परिवार	श्री शशिभूषण मित्तल, 1078, सदाशिव वेठ, शनिपार, पुणे-411030

अग्रवाल साहित्य

अग्रवाल इतिहास और साहित्य का जहाँ तक सम्बंध है सर्वप्रथम ईस्वी सन् 1870 में खड़ी बोली के जनक स्व. भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने 'अग्रवालों की उत्पत्ति' नामक छोटी-सी पुस्तिका लिखकर अग्रसेन, अग्रोहा तथा अग्रवाल विषय से सम्बंधित साहित्य का श्रीगणेश किया था। इसके बाद सन् 1938 में स्व. डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने 'अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास' नामक ग्रंथ लिखकर अग्रसेन, अग्रोहा और अग्रवाल को प्रतिष्ठापित किया। 1942 में डा० परमेश्वरी लाल गुप्त ने 'अग्रवाल जाति का विकास' नामक पुस्तक लिखी। इसके बाद तो न जाने कितने लोगों ने अपने-अपने ढंग से अग्रसेन, अग्रोहा और अग्रवाल के विषय में लिखा और प्रकाशित किया है। यहाँ हम कुछ ग्रंथों की सूची दे रहे हैं, जो उपलब्ध हैं:-

अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल - लेखिका-डा० (श्रीमती) स्वराज्यमणि अग्रवाल, प्रकाशक-अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा धाम, अग्रोहा-125047

अग्रवालों की उत्पति - लेखक-स्व. भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र प्रकाशक-श्री खेमराज श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई।

अग्रवाल वैश्योत्कर्ष - लेखक-श्री हीरालाल शास्त्री, प्रकाशक-श्री खेमराज श्रीकृष्णदास, लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई-400004

अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास - लेखक-डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, ए-1/32, सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली-110029

अग्रवाल जाति का विकास - लेखक-डा० परमेश्वरीलाल गुप्त, प्रकाशक-काशी पेपर स्टोर्स, बुलानाला, वाराणसी।

एक ईंट एक रूपया - लेखक-श्री ओमप्रकाश गर्ग ''मधुप'', प्रकाशक-अग्रोहा विकास ट्रस्ट,

अग्रोहा धाम के निर्माण की कहानी, चित्रों की जबानी- रामेश्वरदास गुप्त, प्रकाशक- अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047 (हरियाणा)

वीरता की विरासत - लेखक-कैप्टन कमलकिशोर बंसल, प्रकाशक-अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047 (हरियाणा)।

अग्रोहा एक ऐतिहासिक धरोहर - लेखक-डा० चम्पालाल गुप्त, प्रकाशक-अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047

महाराजा अग्रसेन गाथा - प्रकाशक-अग्रोहा विकास ट्रस्ट अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047 (हरियाणा)।

अग्रोहा - लेखक-श्री राजाराम शास्त्री-लोकमंच प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली।

अग्रसेन महाराज का जीवन चरित्र - लेखक-श्री गिरिराज प्रसाद मित्तल, प्रकाशक-38/46, किरण पथ सर्किल, मान सरोवर, जयपुर

अग्रकथा - (महाकाव्य) लेखक-श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, प्रकाशक-अग्रवाल परिषद (पंजी.), 8/869, आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022

अग्रोहा-धाम गीतों में - सम्पादक डा० कमल किशोर गोयनका, प्रकाशक-अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047

कविवर दुलीचंद ''शशि'' की कविताओं का मंगल-मिलन नवम्बर 1989 का विशेष अंक - सम्पादक-रामावतार गुप्त, डी-36, साउथ एक्सटैंशन-भाग एक, नई दिल्ली-110049

अग्रोहा दर्शन : - लेखक श्री हरपतराय टांटिया, प्रकाशक-अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047 (हरियाणा)

अग्रगौरव शेरे पंजाब लाला लाजपतराय -डॉ. चम्पालाल गुप्त, प्रकाशक - अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047

श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार : - श्री शिव कुमार गोयल, प्रकाशक - अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047

डॉ राम मनोहर लोहिया : - श्री सत्यवीर अग्रवाल, प्रकाशक - अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047

लाला देशबन्धु गुप्ता : - प्रो. पी.पी. सिंघला, प्रकाशक - अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047

उपरोक्त साहित्य के अतिरिक्त महाराजा अग्रसेन के विभिन्न चित्र, वीडियो एवं ओडियो कैसेट आदि भी उपलब्ध हैं।

पुस्तक एवं अन्य सामग्री प्राप्त करने के लिए सम्पर्क सूत्र :

1. अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-धाम, अग्रोहा-125047 (हरियाणा)
2. अग्रोहा विकास ट्रस्ट, कॉन्टीनेंटल बिल्डिंग, 135-डॉ. एनी बेसंट रोड, वरली, मुम्बई-400018
3. अग्रोहा विकास ट्रस्ट, ऐंस्सेल हाउस, बी-10, लारेंस रोड इण्डस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-110035

महाराजा अग्रसेन के चाँदी के सिक्के

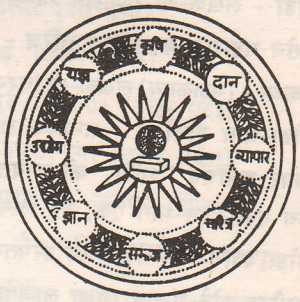

श्री राधेश्याम गुप्ता ने महाराजा अग्रसेन के चाँदी के अप्रचलित सिक्कों के डिजाइन तथा डाइयाँ तैयार करवाईं। सर्वश्री पन्नालाल ओमप्रकाश सर्राफ, रैहगड़पुरा, आर्यसमाज रोड़ नई दिल्ली-110005 ने सिक्के तैयार करवाए। इन सिक्कों को अग्रवाल समाज ने बहुत पसन्द किया। लाखों की संख्या में ये सिक्के वितरित हो चुके हैं। इन सिक्कों का वज़न 10 ग्राम, 20 ग्राम, 50 ग्राम तथा 100 ग्राम है।

चाँदी के सिक्के अग्रोहा विकास ट्रस्ट दिल्ली तथा मुम्बई ने भी तैयार कराए हैं। ये सिक्के अग्रोहा धाम, अग्रोहा-125047 (हरियाणा) तथा अग्रोहा विकास ट्रस्ट, कॉन्टीनेंटल बिल्डिंग, 135-डॉ. एनी बेंसट रोड़, वरली, मुम्बई-400018 और अग्रोहा-धाम दिल्ली कार्यालय, लारेंस रोड, दिल्ली-110035 में उपलब्ध हैं।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित अग्रसाहित्य

अग्रोहा एक ऐतिहासिक धरोहर	डॉ. चम्पालाल गुप्त
वीरता की विरासत	कैप्टन कमलकिशोर बंसल
एक ईंट एक रुपया	श्री ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप'
महाराजा अग्रसेन चित्रगाथा	डॉ. स्वराज्यमणि अग्रवाल
अग्रोहा-धाम कविताओं में	श्री कमलकिशोर गोयनका
अग्रोहा-धाम के निर्माण की कहानी चित्रों की ज़बानी	श्री रामेश्वरदास गुप्त